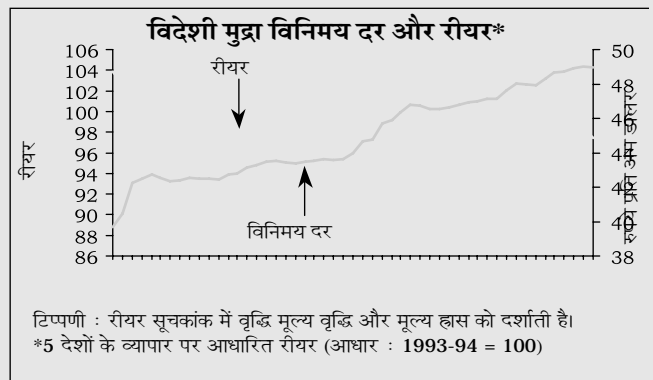
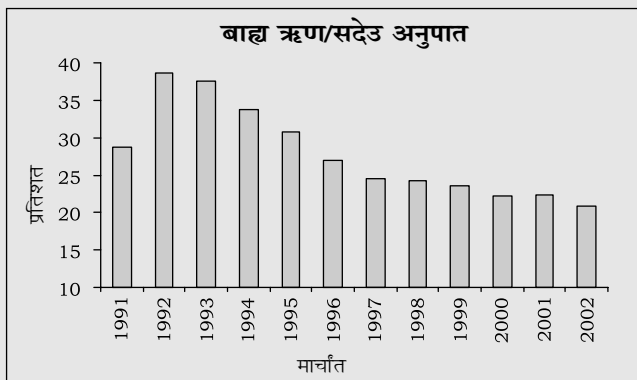
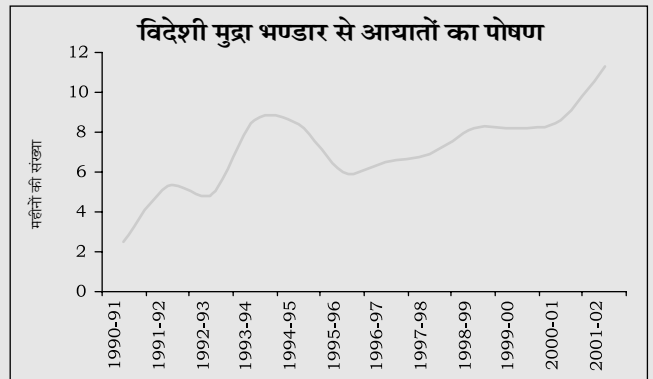
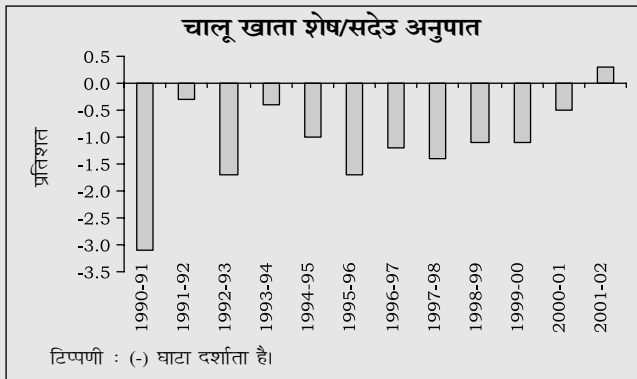


6.1 11 सितंबर 2001 के आतंकवादी हमलों के कारण वैश्विक मंदी के गहराने और अनिश्चितताओं के बावजूद 2001-02 में भारत के बाह्य क्षेत्र ने महत्वपूर्ण उपलब्धियां दर्ज कीं। लगातार छठे वर्ष भी भुगतान संतुलन ने समग्र अधिशेष दर्ज किया। दो दशकों से भी अधिक समय के पश्चात चालू खाते ने अधिशेष दर्शाया। पूंजी प्रवाहों में उछाल ने विदेशी मुद्रा भण्डार को सहारा दिया और वह बढ़कर मार्च 2002 के अंत तक 54 बिलियन अमरीकी डालर का हो गया जो करीब एक वर्ष के आयातों के वित्तपोषण हेतु पर्याप्त था। वर्ष के दौरान प्रारक्षित निधि में 11.8 बिलियन अमरीकी डॉलर की वृद्धि किसी एक वर्ष में सर्वाधिक वृद्धि थी। चलनिधि और बाह्य ऋण की निर्वाहनीयता के संकेतक और सुधरे। 11 सितंबर की घटनाओं से उपजी अस्थिरता की अत्यंत संक्षिप्त अवधि को छोड़कर रुपये की विनिमय दर वर्ष के दौरान मौटे तौर पर स्थिर रही (चार्ट VI.1)।

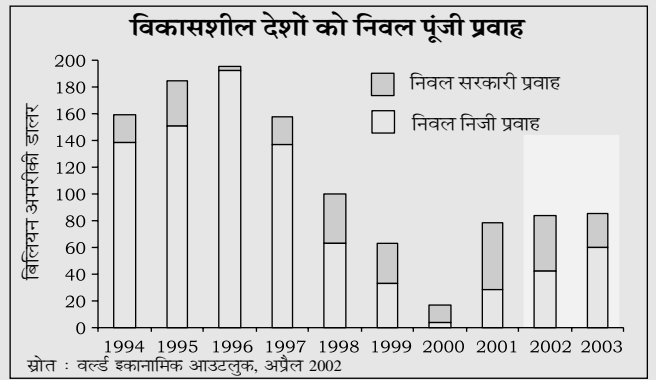
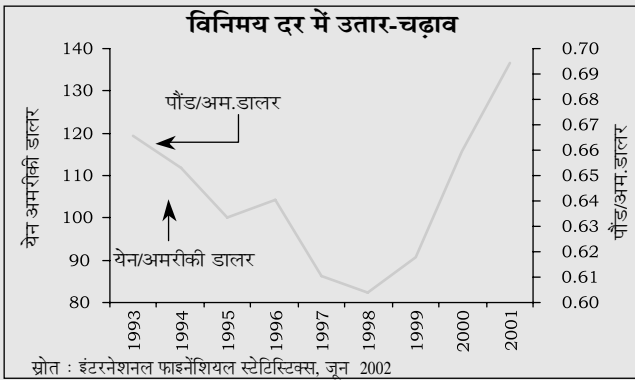
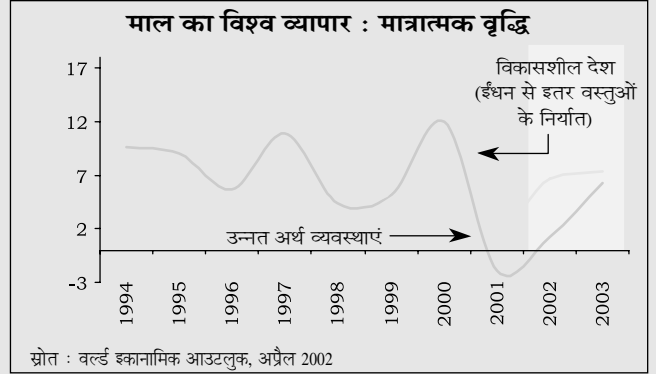
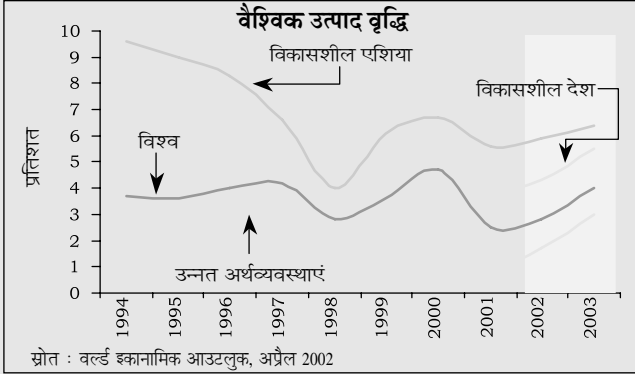
अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियां

6.2 वैश्विक आर्थिक गतिविधि में गिरावट जोकि 2000 के उत्तरार्ध में प्रारंभ हुई थी, 2001 में बढ़ गई और इसके साथ ही विश्व के सभी प्रमुख क्षेत्र (अफ्रीका को छोड़कर) एक साथ मंदी दर्शाने लगे। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुसार 2001 में उत्पादन वृद्धि 2000 के 4.7 प्रतिशत की तुलना में 2.5 प्रतिशत अनुमानित है। 2001 में विश्व व्यापार की मात्रा में 0.2 प्रतिशत तक की गिरावट आई जबकि पूर्व वर्ष में इसमें 12.4 प्रतिशत का तेज वृद्धि हुई थी जो आतंकवादी हमलों और मंदी की स्थिति और भी खराब होने के कारण माल परिवहन की बढ़ी लागत को आंशिक रूप से प्रतिबिंबित करती है। 2001 में विकासशील देशों को पूंजी का प्रवाह मुख्यतः भारी सरकारी प्रवाहों के कारण सुधरा।

चार्ट VI.1 : बाह्य क्षेत्र के प्रमुख संकेतक



चार्ट VI.2 : अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक परिवेश



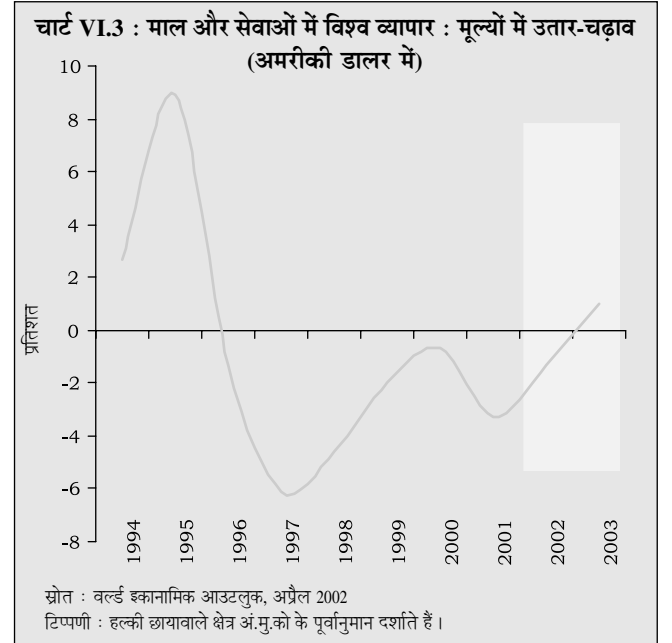
टिप्पणी : छायावाले क्षेत्र अं.मु.को. के पूर्वानुमान दर्शाते हैं।

2001 में समूह - 3 की मुद्राओं ने उल्लेखनीय अस्थिरता दर्शायी। 2001 में यूरो का गिरना सतत जारी रहा और यह अप्रैल 2002 के अंत में 0.89 अमरीकी डालर तक बढ़ने के पहले दिसंबर 2000 के अंत के 0.93 अमरीकी डालर से गिरकर दिसम्बर 2001 के अंत तक 0.88 अमरीकी डालर पर आ गया था। तदनंतर, यूरो तेजी से बढ़ा और जुलाई 2002 के अंत तक 0.99 अमरीकी डालर पर आ गया। जापानी येन ने भी 2001 में अमरीकी डालर की तुलना में गिरावट का रुख दर्शाया (चार्ट VI.2 और परिशिष्ट सारणी VI.1)।

6.3 वर्ष 2002 के लिए अंमुको (वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक, अप्रैल 2002) द्वारा वैश्विक उत्पादन वृद्धि 2.8 प्रतिशत होनी अनुमानित है। यह मामूली-सा सुधार निम्न आधारों पर होने की सम्भावना है (i) इन्वेंट्री सुधार लगभग पूर्ण होने के नजदीक (ii) हाल ही की अपनी सर्वोच्च कीमतों की तुलना में निम्नतर अंतर्राष्ट्रीय तेलमूल्य और (iii) मौद्रिक नीति में उल्लेखनीय ढील तथा राजकोषीय नीति में कुछ कम हद तक दी गयी ढील के साथ विकसित अर्थव्यवस्थाओं में वसूली-समर्थक समष्टि-आर्थिक एवं संरचनागत नीतियां। अंमुको ने भी विश्व व्यापार (माल एवं सेवाएं) की मात्रा में वर्ष 2002 में 2.5 प्रतिशत तक के मामूली सुधार का अनुमान लगाया है। तथापि, व्यापारयोग्य मूल्यों में अमरीकी डॉलर के अनुसार 2001 के दौरान 3.3 प्रतिशत की गिरावट के पश्चात 2002

में 1.3 प्रतिशत तक की और गिरावट आने की सम्भावना है (चार्ट VI.3)।

6.4 विकसित अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक सुधार की कमजोरी के



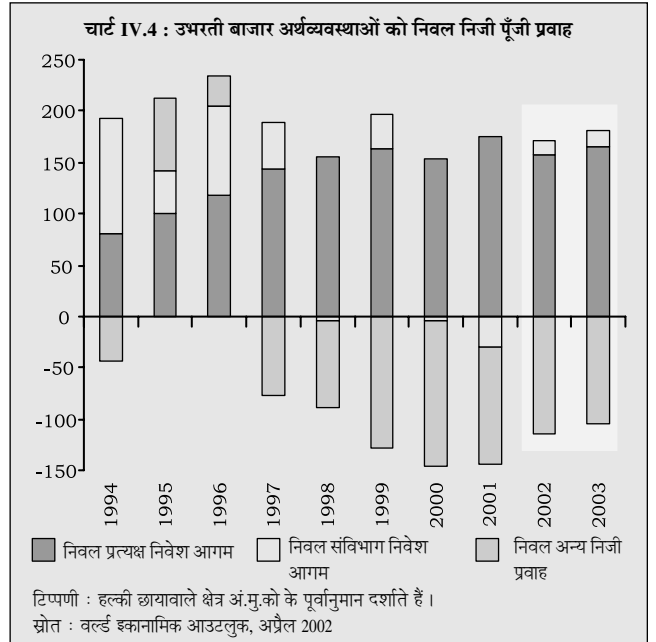
लक्षण हैं : अमरीकी सुधार की क्षीणता, अमरीका में भारी चालू खाता घाटा, प्रमुख मुद्राओं के बीच विनिमय दर असंतुलन, जापान में मंदी का जारी रहना और 11 सितंबर की घटना के परिणामस्वरूप व्यापक अस्थिरता। इसके अतिरिक्त, ऐसा लगता है कि ब्याज दर समायोजनों के माध्यम से मांग को बढ़ाने के अर्थ में मौद्रिक नीति प्रभाव शून्यता की ओर बढ़ रही है और राजकोषीय स्थिति को सुगम बनाने हेतु प्रयास करने के लिए बहुत कम गुंजाइश रह गई है।

6.5 अर्जेटीना संकट से किसी प्रकार की सीधी 'बाजार संक्रामकता' के अभाव में एक समूह के रूप में विकासशील देशों की वृद्धि दर 2001 के 4.0 प्रतिशत से मामूली-सी बढ़ कर 2002 में 4.3 प्रतिशत होने की सम्भावना है। अन्य उभरते हुए बाजारों ऋण निर्गमों के कीमत-लागत अंतर में भी कमी आई है। एशिया में, वृद्धि में सुधार मामूली रहने की आशा है जो वैश्विक इलेक्ट्रॉनिक्स चक्र में सतत गिरावट 11 सितंबर की घटना के परिणामस्वरूप पर्यटन आमदनी में गिरावट और जापान - जोकि एक प्रमुख व्यापारिक साझेदार है, में मंदी तथा येन में गिरावट के कारण बाहरी मांग में भी सतत गिरावट प्रतिबिंबित करती है।

6.6 उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं की ओर पूंजी प्रवाह की संभावनाएं अनिश्चित बनीं हुई हैं। वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक ने उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं को निवल निजी पूंजी प्रवाह पिछले वर्ष के 31.3 बिलियन अमरीकी डालर और 2000 में 7.7 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 2002 में 58.0 बिलियन अमरीकी डालर हो जाने की संतुलित वृद्धि का अनुमान लगाया है जो 1996 के 234.2 बिलियन अमरीकी डालर तथा 1995 के 212.0, बिलियन अमरीकी डालर की तुलना में अभी भी बहुत कम है। तथापि, निवल निजी प्रत्यक्ष निवेश 2001 के 175.5 बिलियन अमरीकी डालर से गिरकर 2002 में 157.1 बिलियन अमरीकी डालर तक रह जाना अनुमानित है (चार्ट VI.4)।

भुगतान संतुलन

6.7 वर्ष 2001-02 के दौरान कमजोर बाह्य मांग के कारण भारत के निर्यात निष्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। आयातों के लिए निम्न घरेलू मांग और वर्ष के अधिकांश भाग में अंतर्राष्ट्रीय तेल कीमतों में मंदी से इसका प्रतिसंतुलन हो गया। इसके परिणामस्वरूप भुगतान संतुलन के आधार पर व्यापार घाटा, वर्ष 2000-01 के दौरान 14.4 बिलियन अमरीकी डालर से घटकर वर्ष 2001-02 के दौरान 12.7 बिलियन अमरीकी डालर का रह गया। अदृश्य खाते ने शुद्ध अधिशेषों को वर्ष 2000-01 के दौरान 11.8 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़ाकर वर्ष 2001-02 के दौरान 14.1 बिलियन अमरीकी डालर तक करते हुए भुगतान संतुलन को सहायता प्रदान करना जारी रखा। चालू खाते ने 1.4 बिलियन अमरीकी डालर का अधिशेष दर्ज किया। निवल पूंजी प्रवाह में 2001-02 के दौरान 9.5 बिलियन अमरीकी डालर पर उच्चतर थे (सारणी 6.1 और परिशिष्ट सारिणी VI.2)। निवल पूंजी प्रवाह में गैर ऋण सर्जक प्रवाह का अंश 2000-01 के 56.6



प्रतिशत से बढ़कर 2001-02 में 62.1 प्रतिशत हो गया।

पण्य व्यापार

6.8 वाणिज्यिक आसूचना और अंक संकलन महानिदेशालय के अनंतिम आंकड़े यह दर्शाते हैं कि पिछले वर्ष के दौरान 21.0 प्रतिशत की उच्च वृद्धि दर्ज करने के पश्चात 43.6 बिलियन अमरीकी डालर के पण्य निर्यातों में 2001-02 के दौरान 2.2 प्रतिशत की कमी हुई है (चार्ट VI.5)। वर्ष 2001-02 के दौरान गैर-तेल निर्यातों में, वर्ष 2000-01 के दौरान की 16.1 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में 2.9 प्रतिशत की कमी आई।

6.9 सभी प्रमुख पण्य समूहों के निर्यातों में सामान्यतः कमी अथवा मंदी आयी। प्राथमिक उत्पादों के निर्यातों में पिछले वर्ष की 9.2 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में 2001-02 में 0.9 प्रतिशत की गिरावट आई। इस समूह के भीतर कृषि और सम्बद्ध उत्पादों के निर्यात 2.0 प्रतिशत घटे। 15.6 प्रतिशत की वृद्धि के मुकाबले 2001-02 के दौरान 3.5 प्रतिशत घटे हैं। गिरावट झेल रही निर्मित वस्तुओं में मुख्य थीं चमड़ा एवं निर्मित वस्तुएं (2.0 प्रतिशत), वस्त्र (10.0 प्रतिशत), रत्न और आभूषण (1.1 प्रतिशत), दस्तकारी (17.2 प्रतिशत) और कालीन (13.5 प्रतिशत) थे (परिशिष्ट सारिणी VI.4 और चार्ट VI.6)।

6.10 गंतव्य देश की दृष्टि से, जहाँ आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) के देशों को होनेवाले निर्यात में 2001-02 के दौरान गिरावट आई वहीं तेल उत्पादक और नियतिक देशों के संगठन (ओपेक) तथा एशिया और अफ्रीका के विकासशील देशों को होने वाले निर्यात में वृद्धि हुई। ओईसीडी समूह में अमरीका

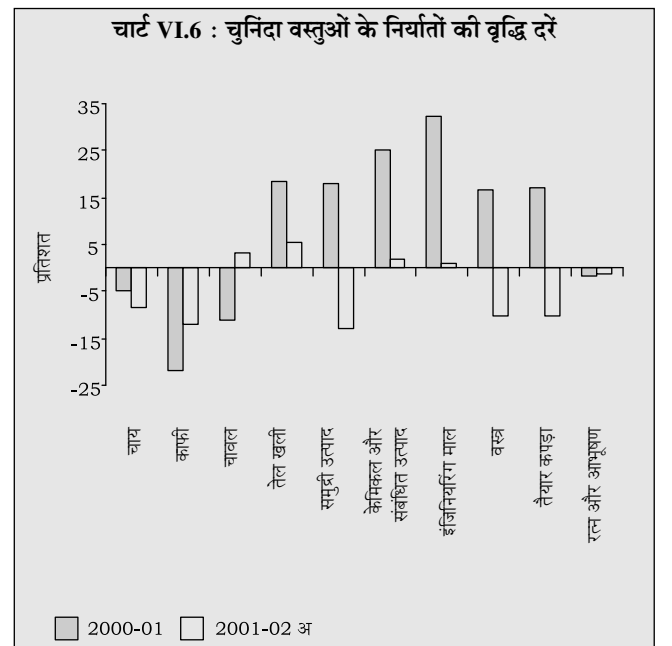
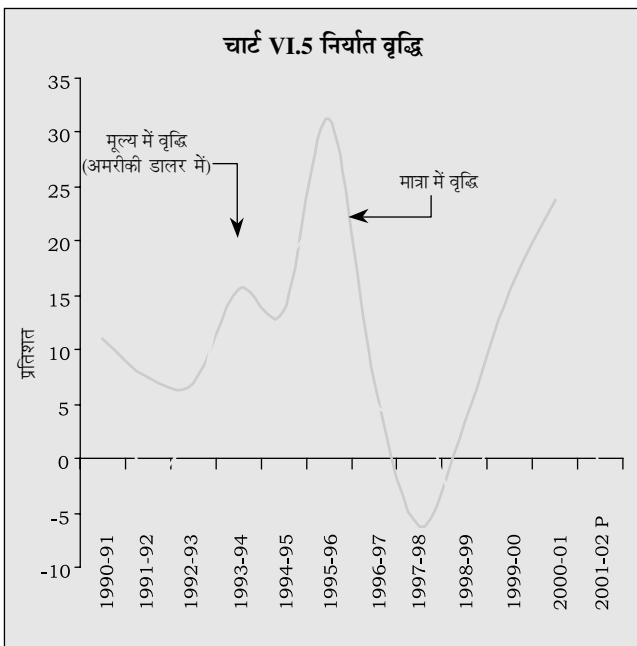
सारणी 6.1 : भुगतान संतुलन : मूल संकेतक

(मिलियन अमरीकी डालर)

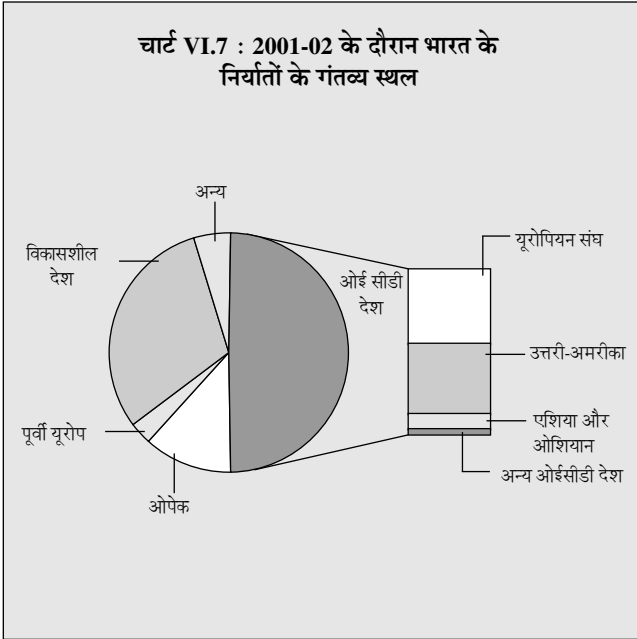
Item / Indicator	2001-02	2000-01	1999-2000	1998-99	1990-91
1	2	3	4	5	6
i) व्यापार शेष	-12,703	-14,370	-17,841	-13,246	-9,437
ii) अदृश्य, निवल	14,054	11,791	13,143	9,208	-243
iii) चालू खाता शेष	1,351	-2,579	-4,698	-4,038	-9,680
iv) पूँजी खाता	9,545	9,023	10,444	8,435	7,056
v) समग्र शेष #	11,757	5,856	6,402	4,222	-2,492
vi) विदेशी मुद्रा प्रारक्षित एवं मौद्रिक स्वर्ण (वृद्धि - कमी +)	-11,757	-5,830	-6,142	-3,829	1,278
संकेतक (प्रतिशत में)					
1. व्यापार					
i) निर्यात / सदेउ	9.3	9.8	8.4	8.3	5.8
ii) आयात / सदेउ	11.9	13.0	12.4	11.5	8.8
iii) व्यापार गत आय : वृद्धि	..	18.3	3.3	6.4	0.2
iv) निर्यात मात्रा वृद्धि	..	23.9	15.5	3.4	11.0
2. अदृश्य खाता					
i) अदृश्य प्राप्तियाँ/सदेउ	7.4	7.6	6.8	6.2	2.4
ii) अदृश्य भुगतान / सदेउ	4.5	5.0	3.9	4.0	2.4
iii) अदृश्य (निवल)/सदेउ	2.9	2.6	3.0	2.2	-0.1
3. चालू खाता					
i) चालू प्राप्तियाँ @/सदेउ	16.6	17.3	15.2	14.5	8.0
ii) चालू प्राप्तियों में वृद्धि @	1.4	17.1	12.9	2.1	6.6
iii) चालू प्राप्तियाँ @/चालू भुगतान	101.2	96.4	93.0	93.2	71.5
iv) चालू लेखा शेष/ सदेउ	0.3	-0.5	-1.1	-1.0	-3.1
4. पूँजी खाता					
i) विदेशी निवेश / सदेउ	1.2	1.1	1.2	0.6	0.03
ii) विदेशी निवेश / निर्यात	13.2	11.4	13.8	7.0	0.6
5. अन्य					
i) ऋण-सदेउ अनुपात	20.8	22.3	22.2	23.6	28.7
ii) ऋण-चुकोती अनुपात	14.1	17.3	16.2	17.8	35.3
iii) देयता-चुकोती अनुपात	15.3	18.3	17.0	18.9	35.6
iv) आयातों के वित्त पोषण में समर्थ विदेशी मुद्रा भंडार (माहों में)	11.3	8.6	8.2	8.2	2.5
# भूल चूक सम्मिलित।	.. उपलब्ध नहीं		@आधिकारिक अंतरणों को छोड़कर		

और जापान को होने वाले निर्यातों में 2001-02 के दौरान क्रमशः 8.8 प्रतिशत तथा 16.7 प्रतिशत की तीव्र गिरावट आयी। अफ्रीका

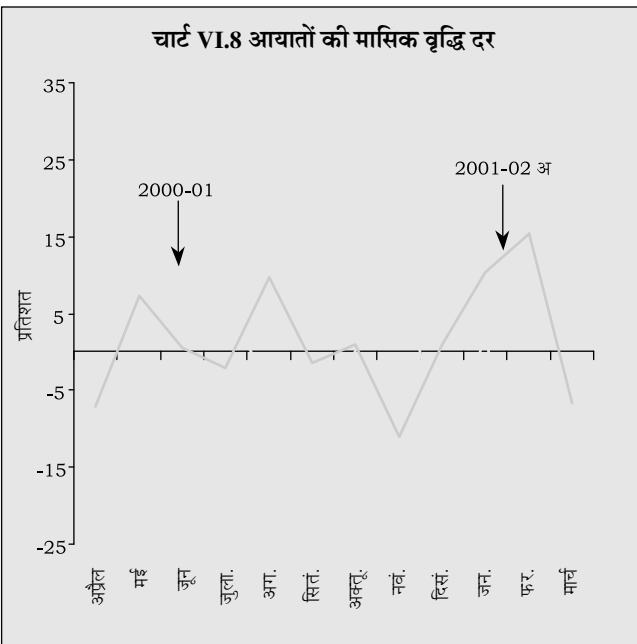
के विकासशील देशों को होने वाले निर्यात में 2001-02 के दौरान 14.4 प्रतिशत की सशक्त वृद्धि हुई जो कि मौटे तौर पर पिछले



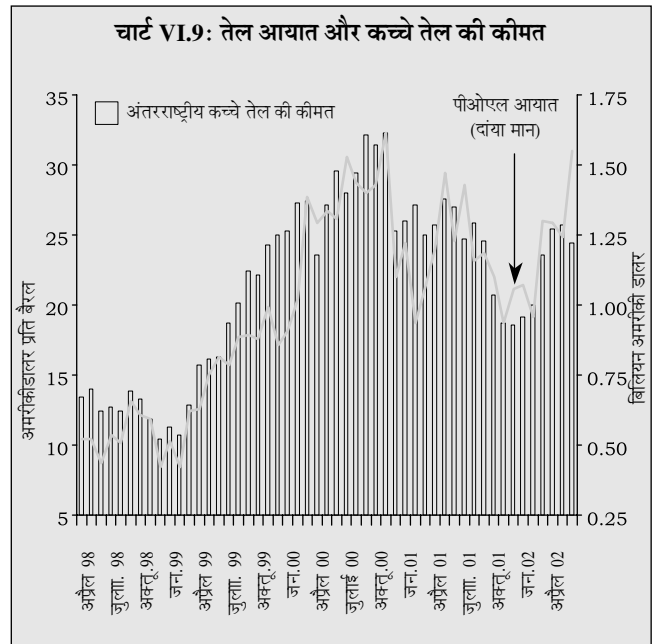
वर्ष की 25.9 प्रतिशत की वृद्धि से ऊपर है। मलेशिया, सिंगापुर और थाईलैण्ड जैसे एशियाई देशों को होने वाले निर्यात में भी 2001-02 के दौरान वृद्धि हुई। वर्ष 2001-02 के दौरान जहाँ ओई सी डी के देशों को भारत के निर्यात का अंश घटकर 49.4 प्रतिशत रह गया वहीं, विकासशील देशों के मामले में यह बढ़कर 30.7 प्रतिशत हो गया (चार्ट VI.7)।



6.11 2001-02 के दौरान 51.1 बिलियन अमरीकी डालर के आयात में 2000-01 के दौरान हुई 1.7 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में 1.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई (परिशिष्ट सारणी VI.3 तथा चार्ट VI.8)।



6.12 मुख्यतः गिरी हुई अंतरराष्ट्रीय कीमतों को प्रतिबिंबित करते हुए 2001-02 में तेल के आयात में 10.5 प्रतिशत की कमी आई, जबकि 2000-01 के दौरान 24.1 प्रतिशत की तीव्र वृद्धि हुई थी। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत में कैलेण्डर वर्ष 2000 के दौरान 28.2 अमरीकी डालर प्रति बैरल की तुलना में 2001 में 14 प्रतिशत गिरावट आई और यह 24.3 अमरीकी डालर प्रति बैरल रह गई। तथापि 2002 के दौरान अब तक कच्चे तेल की कीमत में वृद्धि हुई है। कच्चे तेल की औसत कीमत जनवरी-मार्च 2002 के 20.9 अमरीकी डालर प्रति बैरल की तुलना में अप्रैल-जून 2002 में 25.2 अमरीकी डालर प्रति बैरल हो गई (चार्ट VI.9)।

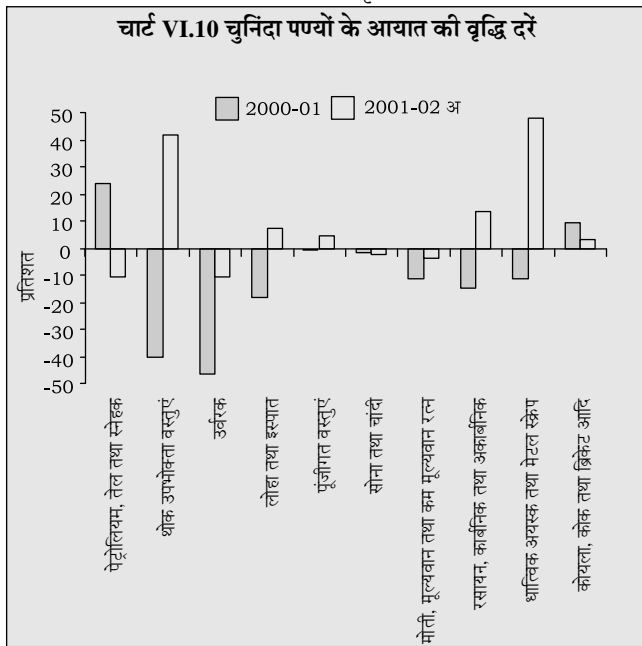


6.13 गैर-तेल आयात में 2000-01 के दौरान दर्ज हुई 5.9 प्रतिशत (2.2 बिलियन अमरीकी डालर) गिरावट के विपरीत 2001-02 के दौरान 6.3 प्रतिशत (2.2 बिलियन अमरीकी डॉलर) की वृद्धि हुई। 'गैर-तेल' मर्चों में थोक उपभोक्ता वस्तुओं के आयात में 2001-02 के दौरान 41.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि पिछले वर्ष की दौरान इसमें 40.3 प्रतिशत की कमी आई थी। पूंजीगत वस्तुओं के आयात में 2001-02 के दौरान 4.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई, जबकि पिछले वर्ष के दौरान इसमें 0.3 प्रतिशत की गिरावट आयी थी। इस उप-समूह के अंतर्गत 'इलेक्ट्रिकल तथा इलेक्ट्रॉनिक्स को छोड़कर मशीनरी' तथा 'इलेक्ट्रॉनिक्स को छोड़कर इलेक्ट्रिकल मशीनरी' के आयात में 2001-02 के दौरान क्रमशः 9.4 प्रतिशत और 23.3 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई। 2001-02 के दौरान आयात के जिन अन्य वर्गों में तीव्र वृद्धि दृष्टिगत हुई वे हैं नॉन फेरस धातु (21.1 प्रतिशत), धातुमय अयस्क तथा धातु स्क्रैप (47.6 प्रतिशत), सिंथेटिक और रिव्लेम्ड रबर सहित कच्चा रबर (14.7 प्रतिशत) कार्बनिक तथा अकार्बनिक रसायन (13.4 प्रतिशत) वस्त्रोपयोगी धागे, फेब्रिक, आदि (24.9 प्रतिशत), कृत्रिम रेजिन तथा प्लास्टिक का सामान (21.3 प्रतिशत), व्यावसायिक, वैज्ञानिक तथा प्रकाशकीय (ऑप्टिक) वस्तुएं (18.0 प्रतिशत)

और रासायनिक सामग्री तथा उत्पाद (32.2 प्रतिशत) ।

6.14 2001-02 के दौरान सोने तथा चांदी के आयात में 2.2 प्रतिशत की गिरावट आयी, जबकि पिछले वर्ष के दौरान इसमें 1.4 प्रतिशत की कमी आई थी । 2001-02 के दौरान सोने तथा चांदी के आयात 4.5 बिलियन अमरीकी डालर के थे, जबकि 2000-01 के दौरान ये 4.6 बिलियन अमरीकी डालर के थे । निर्यात से संबंधित मर्दों यथा मोती, बहुमूल्य तथा कम मूल्यवान रत्न और काजू में भी 2001-02 में गिरावट आई (चार्ट VI.10) । तेल से इतर स्वर्णतर आयात 2001-02 के दौरान 32.6 बिलियन अमरीकी डालर के थे तथा ये पिछले वर्ष की तुलना में 7.6 प्रतिशत (2.3 बिलियन अमरीकी डालर) अधिक थे (परिशिष्ट सारणी VI.5) ।

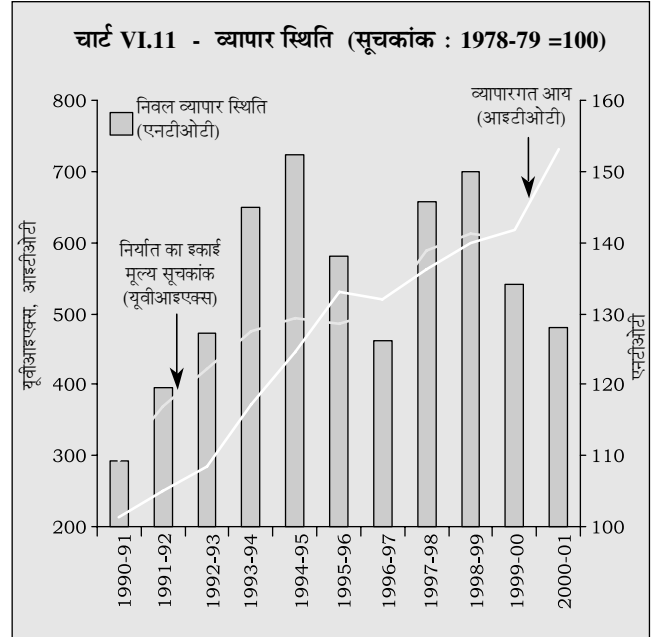
6.15 कच्चे तेल की कीमतों में भारी वृद्धि के कारण 2000-01 में निवल



व्यापार की स्थिति में 4.5 प्रतिशत की गिरावट आयी । व्यापारगत आय की दृष्टि से मापे जाने पर, निर्यातों की आयात क्रयशक्ति में 1990 के दशक में मात्रा की दृष्टि से मजबूत निर्यात वृद्धि होने के कारण सतत सुधार हुआ है (चार्ट VI.11)

6.16 2001-02 के दौरान वाणिज्यिक आसूचना और अंक संकलन महानिदेशालय (डीजीसीआइ एण्ड एस) के अनुसार व्यापार घाटा पिछले वर्ष के 6.0 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 7.5 बिलियन अमरीकी डालर का हो गया (चार्ट VI.12 तथा परिशिष्ट सारणी VI.3) ।

6.17 अप्रैल-जून 2002-03 के दौरान 11.5 बिलियन अमरीकी डालर के निर्यात हुए जिन्होंने पिछले वर्ष की तुलना में 11.3 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की । आयातों में 3.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई और वे 13.2 बिलियन अमरीकी डालर के हुए, जबकि तेल के आयात 11.4 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 4.3 बिलियन अमरीकी डालर के हुए । तेल से इतर आयात 0.4 प्रतिशत गिरकर 8.8 बिलियन अमरीकी डालर के रह गये । वाणिज्यिक आसूचना और अंक संकलन महानिदेशालय के अनुसार अप्रैल-जून 2002

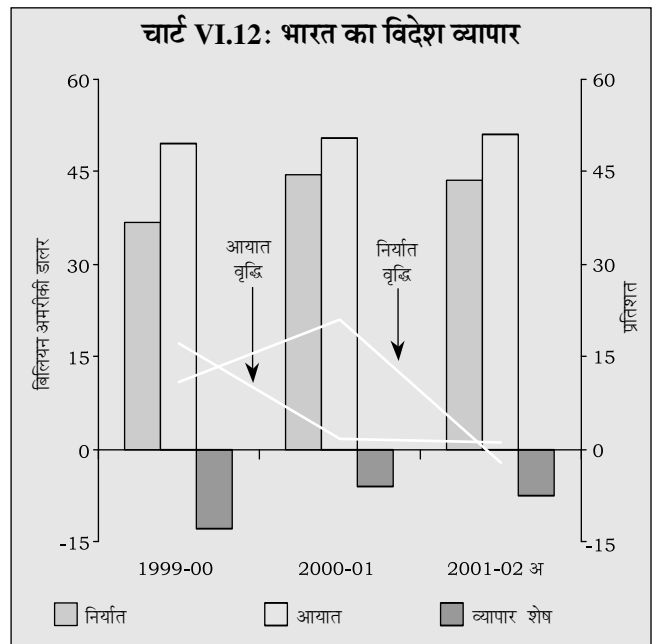


के दौरान 1.7 बिलियन अमरीकी डालर का व्यापार घाटा हुआ जो पिछले वर्ष की तदनुसूची अवधि के 2.4 बिलियन अमरीकी डालर से निम्नतर था ।

अदृश्य

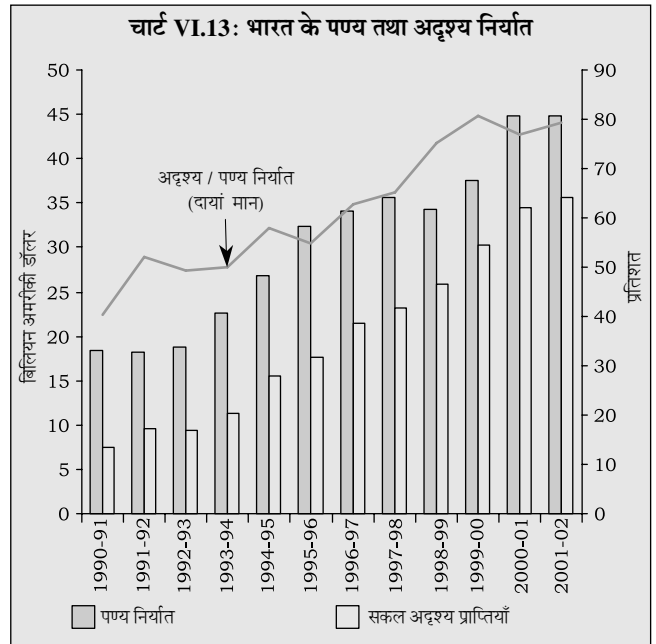
6.18 पिछले वर्ष की तुलना में 2001-02 के दौरान अदृश्य प्राप्तियाँ 2.3 बिलियन अमरीकी डालर बढ़कर 14.1 बिलियन अमरीकी डालर हो गई, जो मुख्यतः गैर-उपादान सेवाओं के सम्बंध में उच्चतर निवल आगमों के कारण थीं (परिशिष्ट सारणी VI.6) ।

6.19 2001-02 के दौरान सकल अदृश्य प्राप्तियाँ 3.4 प्रतिशत



बढ़कर 35.6 बिलियन अमरीकी डालर की हो गयीं जो 1990 के दशक से प्रारंभ वृद्धि की प्रवृत्ति के जारी रहने को दर्शाती हैं। अदृश्य प्राप्तियों की वृद्धि 1990 के दशक के वणिग वस्तुओं के निर्यात से भी आगे निकल गयीं, जो कि गतिशील तुलनात्मक बेहतर स्थिति में परिवर्तन की द्योतक है (चार्ट VI.13)। भारत विश्व में तीव्रतम गति से बढ़ने वाले सेवा के निर्यातक देश के रूप में उभरा है (बाक्स VI.1)।

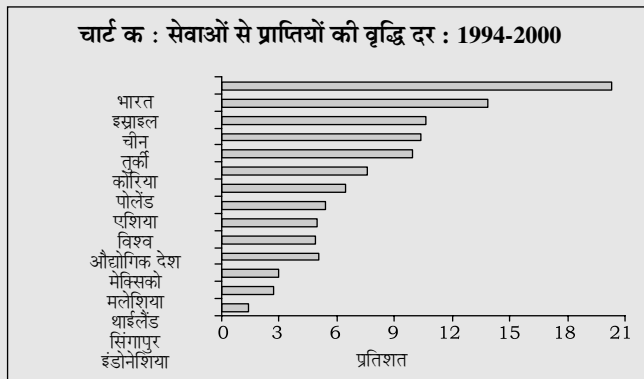
6.20 सेवाओं के निर्यात से होने वाली आय, जिसमें मुख्यतः यात्रा, परिवहन, बीमा और गैर-सरकारी कारोबार तथा अन्य विविध सेवाएं सम्मिलित हैं, 1998-99 से अदृश्य आय के प्रभावी वर्ग के रूप में उभरी है, जिनका कि 2001-02 में अदृश्य प्राप्तियों में 57 प्रतिशत का योगदान था। मुख्यतः प्रवासी भारतीयों द्वारा किए गए प्रेषण तथा अनुदान के रूप में सरकारी अंतरण की अपेक्षाकृत छोटी राशि के अंतरण अदृश्य प्राप्तियों के प्रमुख परंपरागत स्रोत रहे हैं। तथापि, हाल ही के वर्षों में सकल अदृश्य प्राप्तियों में इनका अंश 1997-98 के 53 प्रतिशत से घटकर 2001-02 में 35 प्रतिशत रह गया है। सकल अदृश्य प्राप्तियों में घटक आय का अंश 1990 के दशक में तेजी से बढ़ा तथा 2001-02 में सकल अदृश्य प्राप्तियों का लगभग



बाक्स VI.1

भुगतान संतुलन में अदृश्यों की भूमिका : विभिन्न देशों का सर्वेक्षण

1990 के दशक में भारत के भुगतान संतुलन तथा बाह्य क्षेत्र के प्रबंधन में अदृश्य के अंतर्गत अधिशेष राशि का काफी सीमा तक समर्थन प्राप्त होता रहा है जो कि वर्षों से बढ़ते हुए 1990-91 के 0.2 बिलियन अमरीकी डॉलर के घाटे की तुलना में बढ़कर लगभग 14 बिलियन अमरीकी डॉलर के स्तर पर पहुंच गया है। विभिन्न देशों के तुलनात्मक विश्लेषण से पता चलता है कि सेवाओं के निर्यात से भारत की आय की वृद्धिने (1994-2000 के दौरान 20.3 प्रतिशत वार्षिक की मिश्रित वृद्धि) सभी प्रमुख निर्यातक देशों / क्षेत्रों की वृद्धि को पीछे छोड़ दिया है (चार्ट क)।



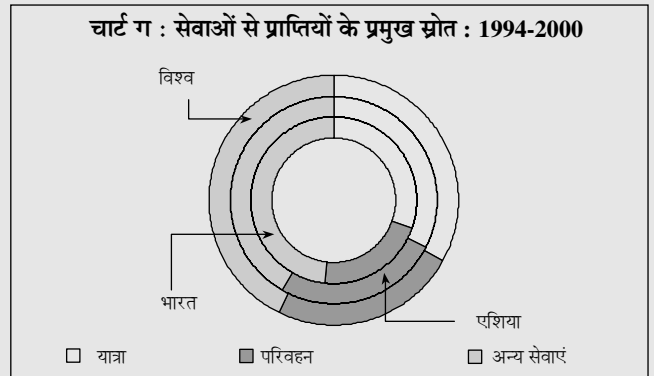
परिणामस्वरूप कुल विश्व निर्यात में भारत के सेवा निर्यात का अंश 1994 के 0.6 प्रतिशत से दोगुने से अधिक बढ़कर 2000 में 1.2 प्रतिशत हो गया। (चार्ट ख)।

सेवाओं को तीन प्रमुख वर्गों यात्रा, परिवहन तथा 'अन्य सेवाएं', में बांटने पर यह पता चलता है कि भारत के कार्य-निष्पादन में अन्य सेवाएं उप समूह अग्रणी रहा है जिसमें साफ्टवेयर तथा अन्य सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़ी सेवाएं आदि सम्मिलित हैं। विश्व निर्यात के इस संवर्ग में भारत की 'अन्य सेवाओं' का अंश 1994-



2000 की अवधि में 0.5 प्रतिशत से चार गुने से अधिक बढ़कर 2.0 प्रतिशत हो गया (चार्ट ग)।

2000 के दौरान 13.5 बिलियन अमरीकी डालर के भारत के चालू अंतरण

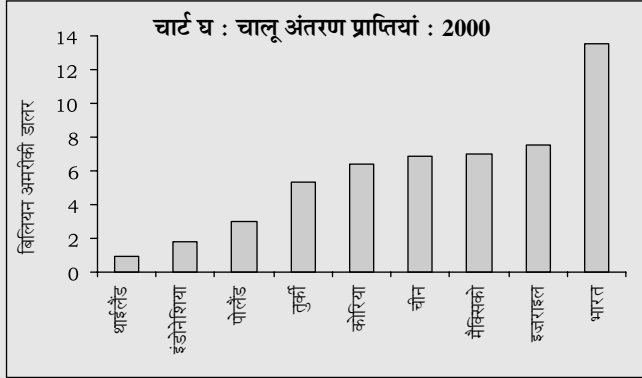


* बाक्स में दिए गए विभिन्न देशों से संबंधित सभी आंकड़े (भारत सहित) अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष की भुगतान संतुलन सांख्यिकी वार्षिकी (2001) पर आधारित हैं।

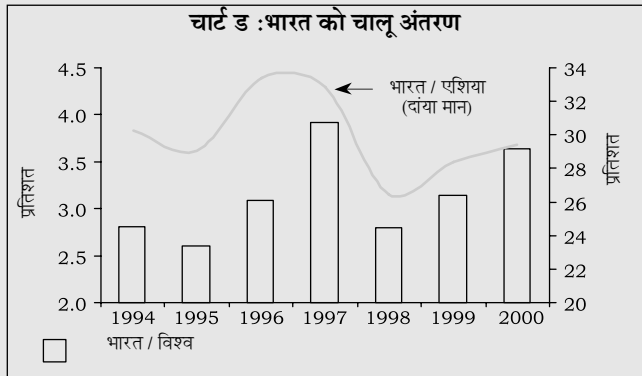
(जारी...)

(समाप्त....)

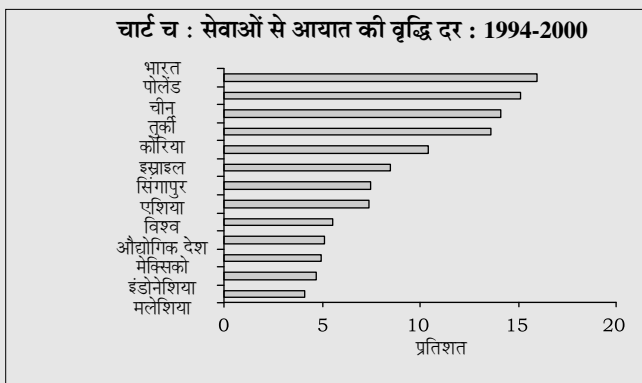
(जो कि लगभग पूर्णतः निजी प्रेषण की वजह से हैं) इज़राइल, मेक्सिको और चीन जैसी अन्य प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं से काफी उच्च स्तर पर थे (चार्ट घ)।



वर्ष 2000 के दौरान भारत ने एशियाई क्षेत्र द्वारा प्राप्त अंतरणों का लगभग 29 प्रतिशत अंश प्राप्त किया (चार्ट ड)

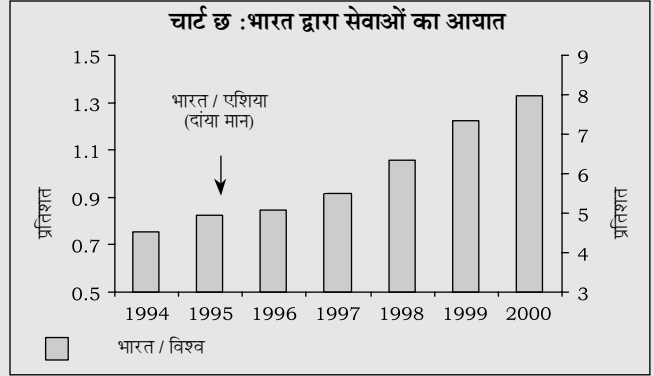


भारत द्वारा सेवाओं के आयातों में भी तीव्र वृद्धि हुई, (1994-2000 की अवधि के दौरान 15.9 प्रतिशत वार्षिक की दर से) यद्यपि इसकी वृद्धि दर प्राप्तियों की दर से कम वेगवान थी (चार्ट च)।

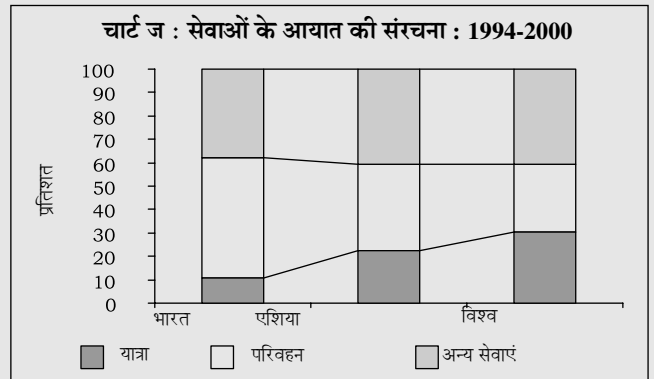


भारत द्वारा परिणामतः 2000 के दौरान सेवाओं का आयात बढ़कर विश्व तथा एशियाई सेवा आयात का क्रमशः 1.3 प्रतिशत तथा 8.7 प्रतिशत अंश हो गया (चार्ट छ)।

1994-2000 के दौरान, भारत ने अपनी यात्रा के कारण होनेवाले सेवाओं के व्यय



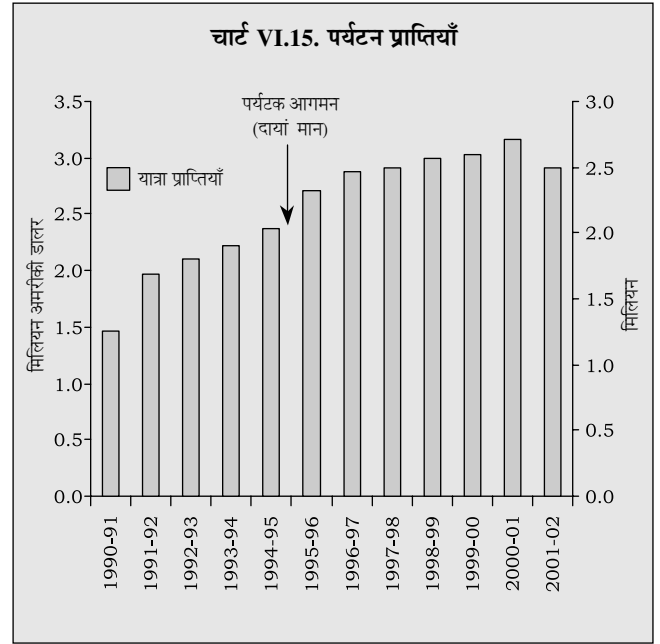
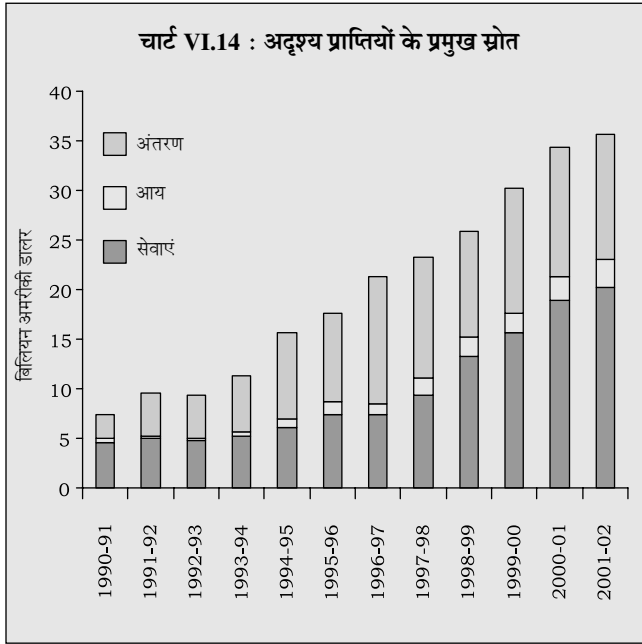
में केवल 10.6 प्रतिशत की ही व्यय किया, जबकि सभी देशों ने मिलकर 28.7 प्रतिशत व्यय किया। 'अन्य सेवाओं' पर कुल सेवाओं के 37.2 प्रतिशत का व्यय मोटे तौर पर उतना ही था जितना एशियाई क्षेत्र तथा सभी देशों का था। दूसरी ओर, परिवहन पर कुल सेवा आयात के 50.5 प्रतिशत का व्यय सभी देशों के व्यय (27.6 प्रतिशत) का लगभग दो गुना था (चार्ट ज)। भारत में यात्रा पर निम्नतर अनुपात के लिए अपेक्षाकृत प्रति व्यक्ति निम्न आय स्तर तथा अपेक्षाकृत निम्न अवकाश भ्रमण व्यय को उत्तरदायी माना जा सकता है, जबकि परिवहन के उच्चतर अंश को अपर्याप्त देशी नौवहन सुविधाओं का संकेतक माना जा सकता है।



विभिन्न देशों के बीच व्यापार में सेवाओं के व्यापार की वृद्धिशील भूमिका को 1990 के दशक में सूचना प्रौद्योगिकी में आई क्रांति बैंकिंग और बीमा जैसे सेवा कार्यकलापों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की बढ़ती हुई भूमिका से भरपूर प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। सेवा के क्षेत्र में प्रबल वृद्धि के बावजूद सेवाओं के अंतरराष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र की बाधाएं, जो मुख्यतः अपारदर्शी हैं, बनी हुई हैं। सेवाओं के निर्यात के क्षेत्र में उदारीकरण से लगभग 1,181 बिलियन अमरीकी डालर का लाभ होगा जो कि वणिक् माल के उदारीकरण से होने वाले लाभ (677 बिलियन अमरीकी डालर) से होने वाले लाभ से लगभग दो गुना है (अंमुको, 2001) इस प्रकार, भारत में अदृश्य आय से और अधिक लाभ बनाने की संभाव्यता है।

संदर्भ:

1. ब्रेगा, कार्लोस ए.पी. (1996 "द इंपैक्ट ऑफ लिबरेलाइजेशन ऑफ सर्विसेज ऑन डेवलपिंग कंट्रीज", फाइनेंस एंड डेवलपमेंट, खंड33, अंक 1, मार्च।
2. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (2001)-वर्ल्ड इकॉनॉमिक आउटलुक, अक्टूबर।



आठ प्रतिशत हो गया (चार्ट VI.14)।

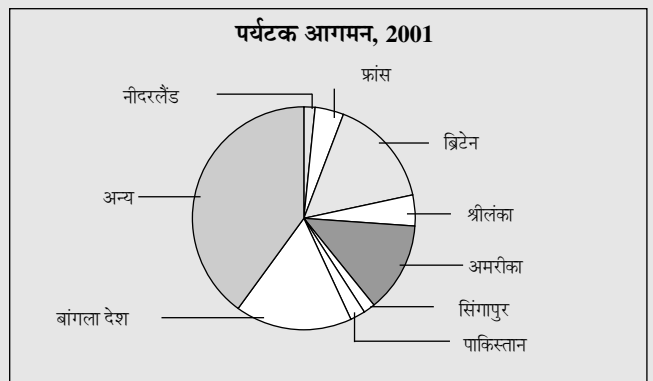
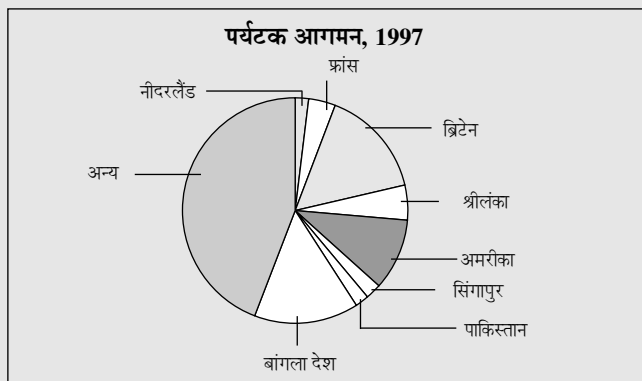
6.21 सेवाओं के वर्ग में यात्राओं से होने वाली प्राप्तियाँ में, पर्यटन से होने वाली आय दूसरा सबसे बड़ा वर्ग है। हाल के वर्षों में अंतरराष्ट्रीय पर्यटन के लिए अत्यधिक अनिश्चित वातावरण के कारण इन प्राप्तियों में ठहराव बना रहा है जो कि 2001-02 में 11 सितंबर की घटना तथा भारतीय उप महाद्वीप में भौगोलिक-राजनीतिक परिस्थितियों के कारण और अधिक विषम हो गया है। यात्रा से होनेवाली प्राप्तियों के उतार-चढ़ाव से भारत में पर्यटकों के आगमन उतार-चढ़ाव का परिचय मिलता है (चार्ट VI.15)। पिछले 4-5 वर्षों के दौरान पर्यटकों के आगमन की संरचना मोटे तौर पर अपरिवर्तित बनी रही है (चार्ट VI.16)।

6.22 नब्बे के दशक के अंत में सॉफ्टवेयर निर्यात और प्रौद्योगिकी से संबंधित तथा कारोबारी सेवाओं सहित विविध सेवाओं ने सॉफ्टवेयर निर्यात में तीव्र गति दिखाते हुए तीव्र वृद्धि दर्ज की जिसे अर्थव्यवस्था में क्रमिक

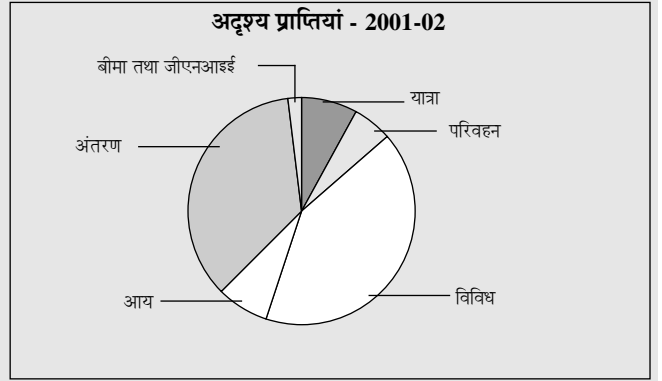
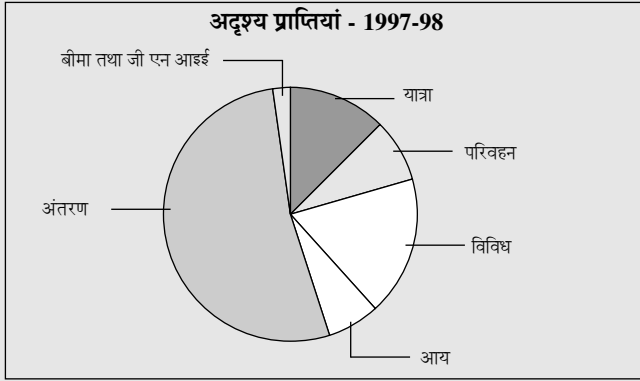
उदारीकरण के परिवेश से सामान्य प्रोत्साहन मिला। वर्ष 1997-98 तक विविध सेवाओं से मिलनेवाली आय यात्रा घटक को पीछे छोड़ते हुए अदृश्य प्राप्तियों का बड़े अंश के रूप में भरी 2001-02 में विविध सेवाओं ने अदृश्य प्राप्तियों की अत्यंत महत्वपूर्ण श्रेणी के रूप में निजी अंतरण का स्थान लिया (चार्ट VI.17)। सॉफ्टवेयर निर्यात, आय ने 2001-01 में आई 57.9 प्रतिशत की वृद्धि के ऊपर 2001-02 में 13.1 प्रतिशत की अधिक वृद्धि दर्ज की, जबकि विश्व भर में सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियों में मंदी देखी गई थी (चार्ट VI.18)

6.23 हाल के वर्षों में निजी अंतरण प्राप्तियां सकल अदृश्य प्राप्तियों में अपना अहम स्थान धीरे-धीरे खो रही हैं। इसका आंशिक कारण है स्वर्ण आयातों के उदारीकरण के बाद देश में निजी में सामान के रूप में लाए जानेवाले बुलियन (सोना-चांदी) में आई तेज गिरावट। आवक प्रेषण में जो इस श्रेणी का मुख्य आधार है, गिरावट आने के कारण निजी अंतरण

चार्ट VI.16 : पर्यटक आगमन : देशवार



चार्ट VI.17 : अदृश्य प्राप्तियों की संरचना



2000-01 के 12.9 बिलियन अमरीकी डालर से गिरकर 2001-02 में 12.2 बिलियन अमरीकी डालर के रह गए जो 11 सितंबर के पश्चात के प्रभाव को दर्शाता है ।

6.24 वर्ष 2001-02 के दौरान निवेशगत आय से प्राप्तियां 17.9 प्रतिशत बढ़कर 2.7 बिलियन अमरीकी डालर की हो गईं जो विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि और इन आस्तियों को विदेश में विनियोजित करने से रिजर्व बैंक की विदेशी आय में हो रही वृद्धि के अनुरूप है (चार्ट VI.19) ।

6.25 अदृश्य भुगतानों में 2001-02 में 4.8 प्रतिशत गिरावट के साथ उनकी राशि 21.6 बिलियन अमरीकी डालर की रह गयी, क्योंकि विविध सेवाओं के भुगतानों में हुई वृद्धि अन्य वर्ग की सेवाओं तथा निवेशगत आय के भुगतानों आई कमी से प्रतिसंतुलित हो गई (चार्ट VI.20) ।

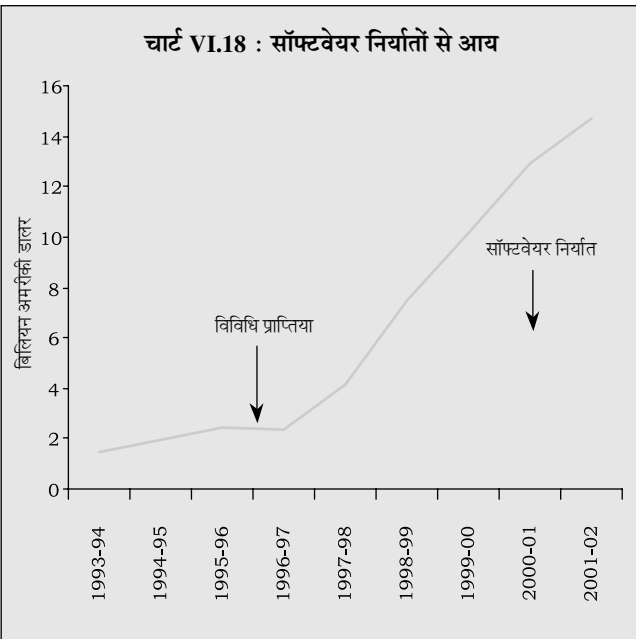
6.26 यात्रा भुगतानों में जो 1994 में चालू अंतर्राष्ट्रीय लेनदेनों के उदारीकरण के परिणामस्वरूप, नब्बे के दशक में निरंतर बढ़ रहे

थे, 2001-02 में 20.6 प्रतिशत की गिरावट आयी और उनकी राशि 2.3 बिलियन अमरीकी डालर की रह गई । कारोबार और पर्यटन के प्रतिकूल अंतर्राष्ट्रीय परिवेश के कारण भारतीयों की विदेश यात्रा में कमी आई जो इस कारोबार के अंतर्गत हुए कम बहिर्गम और सीमित यात्रा भुगतान के रूप में परिलक्षित होती हैं ।

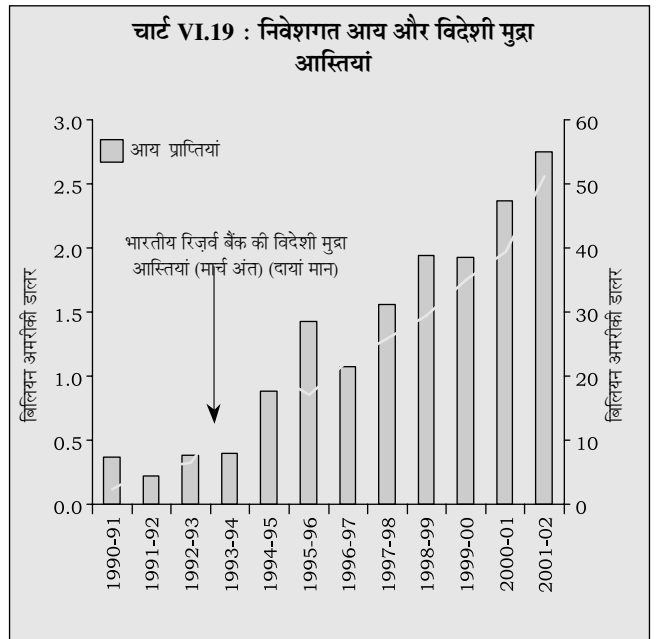
6.27 वर्ष 2001-02 में विविध भुगतानों में 10.2 प्रतिशत की वृद्धि होकर उसकी राशि 10.9 बिलियन अमरीकी डालर की हो गई जो कि वित्तीय सेवाओं, प्रौद्योगिकी से संबंधित सेवाओं और अन्य विभिन्न प्रकार की कारोबारी सेवाओं के कारण हुई ।

6.28 भारत की बाह्य देयताओं के शोधन के लिए किए गए निवेशगत आय से भुगतानों में 2001-02 के दौरान 12.7 प्रतिशत की कमी आयी और उसकी राशि 5.4 बिलियन अमरीकी डालर रह गई जिसका मुख्य कारण है अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में ब्याज दरों में आई नरमी । सामान्य रूप में निवेश आयगत भुगतान बाह्य देयताओं के स्टॉक के साथ-साथ बदलते रहे

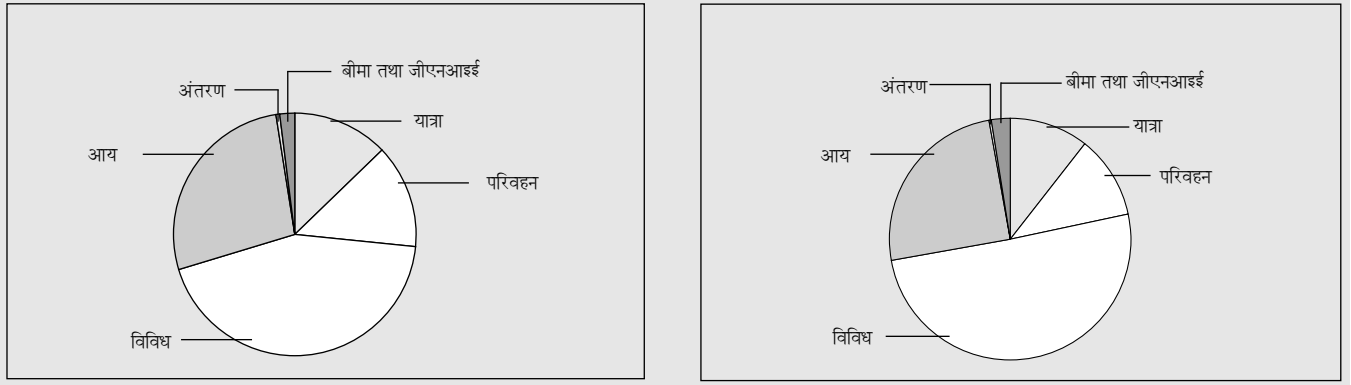
चार्ट VI.18 : सॉफ्टवेयर निर्यातों से आय



चार्ट VI.19 : निवेशगत आय और विदेशी मुद्रा आस्तियां



चार्ट VI.20 : अदृश्य भुगतानों की संरचना



हैं (चार्ट VI.21)

चालू खाता

6.29 वर्ष 2001-02 के दौरान चालू खाते ने 1.4 बिलियन अमरीकी डालर का अधिशेष दर्ज किया, जबकि पिछले वर्ष के दौरान 2.6 बिलियन अमरीकी डालर का घाटा हुआ था ; इस वर्ष के दौरान चालू खाता शेष में आए इस परिवर्तन का कारण है वणिक माल खाते के पर निवल भुगतानों में आया संकुचन और साथ ही अदृश्य अधिशेष की अधिकता (चार्ट VI.22) । सकल देशी उत्पाद के अनुपात के रूप में 2001-02 के दौरान चालू खाते में 0.3 प्रतिशत का अधिशेष था, जबकि 2000-01 में 0.5 प्रतिशत और नब्बे के दशक में औसतन 1.3 प्रतिशत घाटा हुआ था ।

पूंजी खाता

6.30 वर्ष 2001-02 में भुगतान संतुलन की स्थिति अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय बाजारों में अनिश्चितता के माहौल के बावजूद पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में

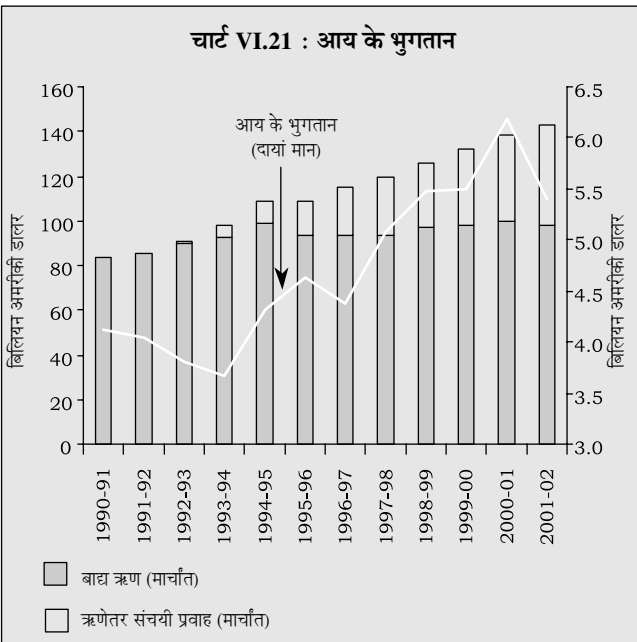
अधिक पूंजीगत प्राप्तियों के कारण बेहतर रही । वर्ष 2001-02 के दौरान प्रत्यक्ष विदेशी निवेशगत प्राप्तियों और अनिवासी जमाराशियों के कारण निवल पूंजीगत प्राप्तियां अधिक अर्थात् 9.5 बिलियन अमरीकी डालर की रहीं, जबकि 2000-01 के दौरान यह राशि 9.0 बिलियन अमरीकी डालर की थी (चार्ट VI.23 और परिशिष्ट सारणी VI.2) ।

6.31 यह उल्लेखनीय है कि कुल पूंजीगत प्राप्तियों के प्रति स्थिर प्राप्तियों (अर्थात् संविभाग प्राप्तियों और अल्पावधि व्यापार ऋण को छोड़कर अन्य सभी पूंजीगत प्राप्तियों) का अनुपात 2000-01 के 68.2 प्रतिशत से तेजी से बढ़कर 2001-02 के दौरान 88.1 प्रतिशत हो गया । (चार्ट VI.24 और परिशिष्ट सारणी VI.7) ।

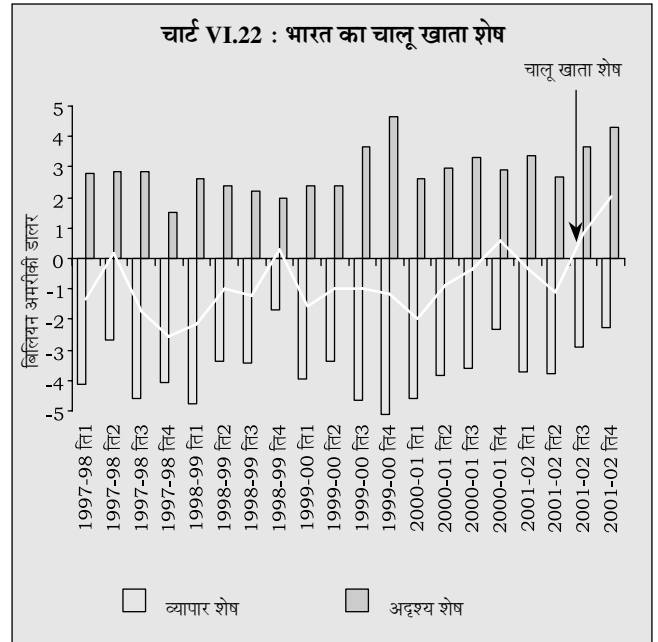
विदेशी निवेश

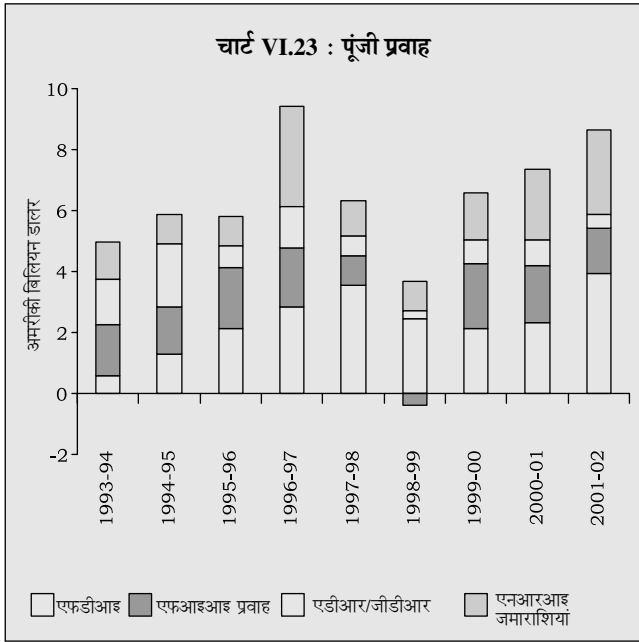
6.32 2001-02 में विदेशी निवेशगत प्राप्तियां बढ़कर 5.9 बिलियन अमरीकी डालर की हो गईं जो विश्वभर के निवेशकों के

चार्ट VI.21 : आय के भुगतान

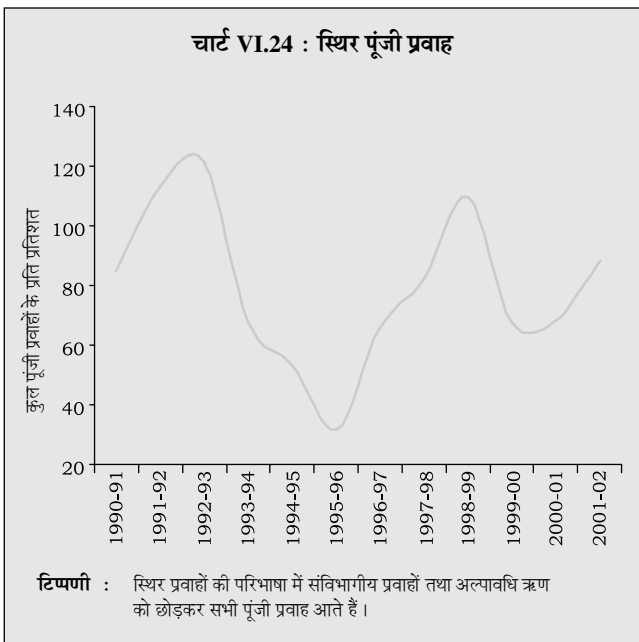


चार्ट VI.22 : भारत का चालू खाता शेष





भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रति बढ़ते विश्वास को दर्शाती है। विदेशी निवेश प्राप्तियों में हुई वृद्धि का कारण है विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के अंतर्गत हुई प्राप्तियां जो 2001-02 के दौरान 3.9 बिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गईं और उसने 1997-98 में प्राप्त 3.6 बिलियन अमरीकी डालर के रिकार्ड को पीछे छोड़ दिया। दूसरी ओर संविभागीय निवेश प्राप्तियां 2000-01 के 2.8 बिलियन अमरीकी डालर से गिरकर 2001-02 के दौरान 2.0 बिलियन अमरीकी डालर की रह गईं क्योंकि विदेशी संस्थागत निवेश (एफआईआई) प्राप्तियाँ और जीडीआर/एडीआर के माध्यम से जुटाई गई राशियां दोनों ही पिछले वर्ष से कम



थीं (सारणी 6.2)।

6.33 विदेशी प्रत्यक्ष निवेश प्राप्तियों का स्रोत और दिशा नब्बे के दशक के दौरान कमोबेश रूप में अपरिवर्तित बनी रही। मॉरीशस और अमरीका में पूंजीकृत कंपनियां 2001-02 के दौरान भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का प्रमुख स्रोत रहीं (सारणी 6.3)।

6.34 प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का अधिकतर अंश 'सेवा', 'इलेक्ट्रॉनिक और इलेक्ट्रिक उपकरण,' 'कम्प्यूटर (हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर)', 'इंजीनियरी उद्योग, फार्मास्युटिकल्स, 'रसायन और संबद्ध उत्पाद'

सारणी 6.2 श्रेणी-वार विदेशी निवेश से प्राप्तियां

(मिलियन अमरीकी डालर)

Item	2001-02 (अ)	2000-01	1999-00
1	2	3	4
अ. प्रत्यक्ष निवेश	3,904	2,339	2,155
क) सरकार (एसआईए/एफआईपीबी)	2,221	1,456	1,410
ख) भारतीय रिजर्व बैंक	767	454	171
ग) अनिवासी भारतीय	35	67	84
घ) शेयरों का अधिग्रहण *	881	362	490
आ. संविभाग निवेश	2,021	2,760	3,026
क) जीडीआर/ एडीआर#	477	831	768
ख) एफआईआई @	1,505	1,847	2,135
ग) अपतटीय निधियाँ और अन्य	39	82	123
कुल (अ+आ)	5,925	5,099	5,181

अ अनंतिम

* फेमा 1999 की धारा 5 के अंतर्गत अनिवासियों द्वारा भारतीय कंपनियों के शेयरों के अधिग्रहण से संबंधित

भारतीय कंपनियों द्वारा ग्लोबल डिपाजिटरी रसीद (जीडीआर)/अमरीकी डिपाजिटरी रसीद (एडीआर) द्वारा जुटाई गई राशि।

@ विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) द्वारा निवल निधि प्रवाह।

टिप्पणी : यहां विदेशी निवेश के संबंध में दिए गए आंकड़े देश में सकल प्राप्तियां दर्शाते हैं, वे और अन्य सारणियों, जिनमें विदेशी निवेश के आधार पर प्रत्यक्ष आयात, विदेश में भारतीय निवेश तथा विनिवेश शामिल हैं, में दिए गए आंकड़ों से मेल नहीं खा सकते। ये खंड V में विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा शेयर बाजार में निवल निवेश के संबंध में दिए गए आंकड़ों से भी भिन्न हैं।

एवं' खाद्यान्न और डेरी उत्पाद क्षेत्र में प्राप्त हुआ (सारणी 6.4)।

अनिवासी जमाराशियां

6.35 विभिन्न अनिवासी भारतीय जमाराशि योजनाओं के अंतर्गत 2001-02 में निवल जुटाई गई कुल राशि पिछले वर्ष से अधिक थी। यह वृद्धि संपूर्णतः एनआर(ई)आरए योजना के अंतर्गत प्राप्त जमाराशियों के कारण हुई। तथापि, अन्य योजनाओं (एफसीएनआर(बी) और एनआर (एनआर) (आरडी) के अंतर्गत जुटाई गई जमाराशियां पिछले वर्ष की

सारणी 6.3 : विदेशी प्रत्यक्ष निवेश-देशवार प्राप्तियां *

(मिलियन अमरीकी डालर)

	2001-02 P	2000-01	1999-2000
1	2	3	4
जर्मनी	74	113	31
इटली	28	29	125
जापान	143	156	142
मॉरीशस	1,863	843	501
नीदरलैण्ड	68	76	82
दक्षिण कोरिया	3	24	8
अमरीका	364	320	355
अन्य	445	349	337
कुल	2,988	1,910	1,581

अ अनंतिम

* रिज़र्व बैंक द्वारा अनिवासी भारतीय प्रत्यक्ष निवेश प्रणाली के अंतर्गत हुई प्राप्तियों और शेयरों के अभिग्रहण से हुई प्राप्तियों को छोड़कर ।

सारणी 6.4 : विदेशी प्रत्यक्ष निवेश-उद्योग-वार प्राप्तियां *

(मिलियन अमरीकी डालर)

क्षेत्र	2001-02 (अ)	2000-01	1999-2000
1	2	3	4
रसायन और सम्बद्ध उत्पाद	67	137	120
कम्प्यूटर	368	306	99
इंजीनियरी	231	273	326
इलेक्ट्रॉनिक और इलेक्ट्रिक उपकरण	659	213	172
वित्त	22	40	20
खाद्य और डेरी उत्पाद	49	75	121
फार्मास्युटिकल्स	69	62	54
सेवाएं	1,128	226	116
अन्य	396	578	553
कुल	2,988	1,910	1,581

अ अनंतिम

* रिज़र्व बैंक द्वारा अनिवासी भारतीयों से प्रत्यक्ष निवेश प्रणाली के अंतर्गत हुई प्राप्तियों और शेयरों के अभिग्रहण से हुई प्राप्तियों को छोड़कर ।

तुलना में कम थीं (सारणी 6.5 और चार्ट VI.25) ।

बाह्य वाणिज्यिक उधार

6.36 देशी निवेश मांग में कमी के कारण बाह्य वाणिज्यिक उधार (ईसीबी) के लिए मांग नियंत्रित रही । वर्ष 2001-02 में बाह्य वाणिज्यिक उधारों के अंतर्गत 3.1 बिलियन अमरीकी डालर का वितरण हुआ, जबकि 2000-01 में यह राशि 3.8 बिलियन अमरीकी डालर (इंडिया मिलेनियम जमा (आइएमडी) के 5.5 बिलियन अमरीकी डालर को छोड़कर) थी (चार्ट VI.26) । ऋण परिशोधन अदायगियों में गिरावट आकर उसकी राशि पिछले वर्ष जब पूर्व भुगतान /पुनर्वित्तपोषण का अधिक सहारा लिया गया था के 5.3 बिलियन अमरीकी डालर की तुलना में 4.3 बिलियन अमरीकी डालर रह गई । तदनुसार, वर्ष 2001-02 के दौरान बाह्य

सारणी 6.5 : अनिवासी भारतीय जमा योजनाएं

(मिलियन अमरीकी डालर)

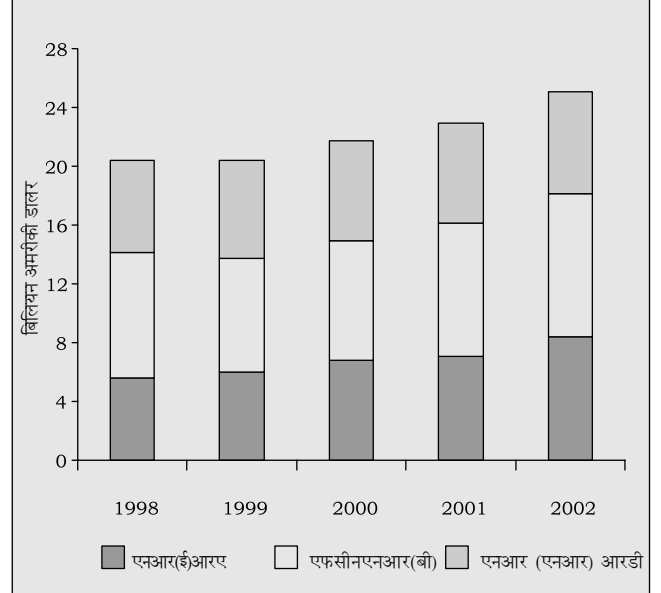
Scheme	शेष राशियां मार्च के अंत में		घटबढ़ @	
	2002(अ)	2001	2001-02(अ)	2000-01
1	2	3	4	5
1. एफसीएनआर(बी)	9,670	9,076	594	904
2. एनआर(ई) आरए	8,432	7,147	1,626	860
3. एनआर (एनआर)आरडी	7,049	6,849	508	553
कुल	25,151	23,072	2,728	2,317

अ अनंतिम

@ सभी आंकड़ों में प्रोद्भूत ब्याज और अमरीकी डालर की तुलना में अन्य डालरेतर मुद्राओं में घटबढ़ के कारण होनेवाले मूल्यसंबंधी परिवर्तन शामिल हैं ।

टिप्पणी : घटबढ़ के आंकड़े वर्ष के दौरान विनिमय दर में हुए परिवर्तन के कारण रुपया जमाराशियों के बकाया स्टॉक के बीच होनेवाले अंतर से मेल नहीं खाते हैं ।

चार्ट VI.25 : बकाया अनिवासी जमाराशियां

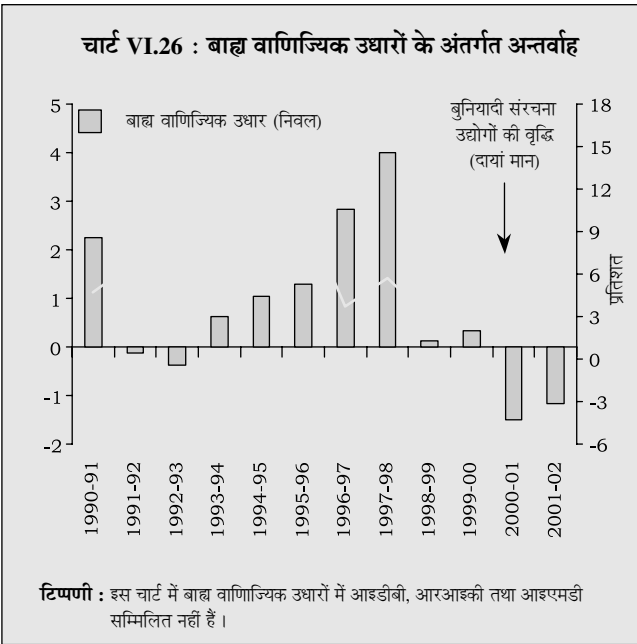


वाणिज्यिक उधारों के अंतर्गत हुए निवल बहिर्गम की राशि 1.1 बिलियन अमरीकी डालर थी, जबकि 2000-01 में यह राशि 1.5 बिलियन अमरीकी डालर (इंडिया मिलेनियम डिपॉजिट को छोड़कर) थी ।

बाह्य सहायता

6.37 वर्ष 2001-02 के दौरान बाह्य सहायता के अंतर्गत निवल प्राप्तियों की राशि (चुकौती तथा ब्याज चुकौती घटाकर ऋण तथा अनुदान) 0.4 बिलियन अमरीकी डालर थी जबकि पिछले वर्ष, अधिक वितरण और कम ऋण परिशोधन के कारण यह राशि 0.6 बिलियन अमरीकी डालर थी । ऋण परिशोधन अदायगी की राशि 2000-01 2.6 बिलियन अमरीकी डालर की थी जो गिरकर 2001-02 में 2.2 बिलियन अमरीकी डालर की रह गई क्योंकि पिछले वर्ष में पूर्व अदायगियाँ सम्मिलित थीं (सारणी VI.8)। वर्ष 2001-02 के दौरान 3.7 के दौरान बिलियन अमरीकी डालर पर

चार्ट VI.26 : बाह्य वाणिज्यिक उधारों के अंतर्गत अन्तर्वाह

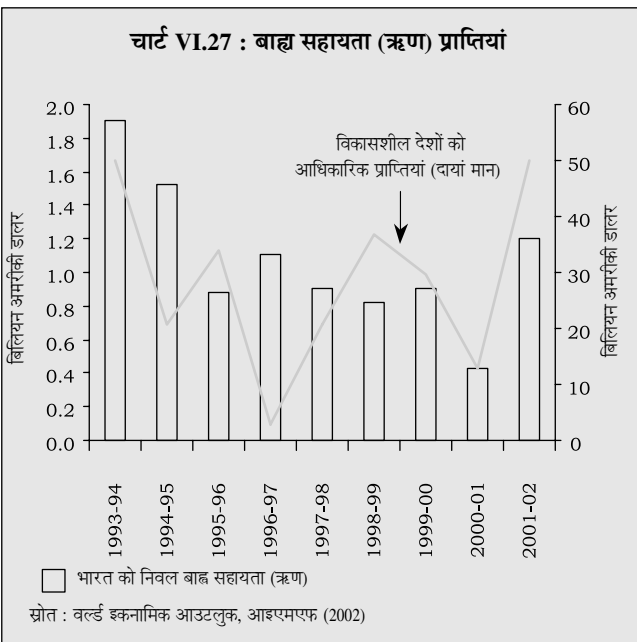


सकल उपायोग (ऋण तथा अनुदान) पिछले वर्ष के दौरान 3.1 बिलियन अमरीकी डालर की तुलना में उच्चतर थे (परिशिष्ट सारणी VI.8)। हाल के वर्षों में बाह्य सहायता के अंतर्गत प्राप्तियों का महत्त्व कम हो रहा है जिसका कारण है ऋणेतर प्राप्तियों को आकर्षित करने के लिए नीतिगत प्रयास तथा साथ ही विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की ओर समग्र आधिकारिक प्रवाह में व्यापक मन्दी (चार्ट VI-27)।

अल्पावधि ऋण

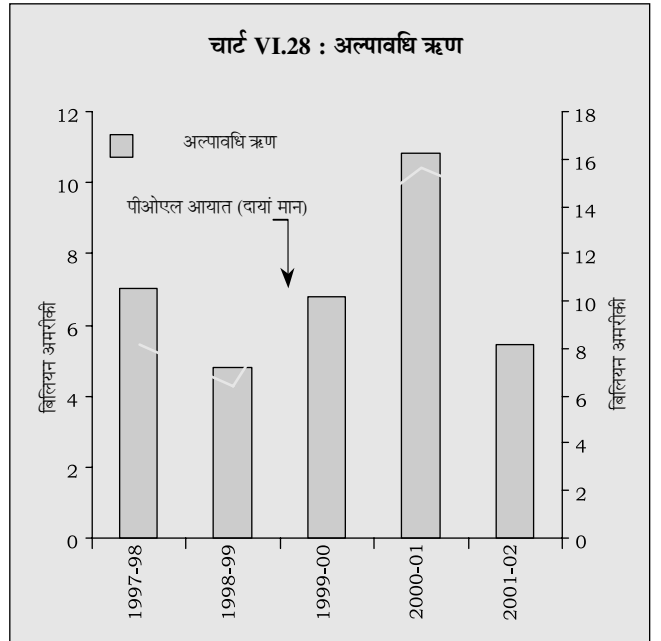
6.38 अल्पावधि ऋण के अंतर्गत वितरण लगभग आधा रह गया है जिसका मुख्य कारण है वर्ष के दौरान तेल के आयात में आई गिरावट जो 2000-01 में 10.8 बिलियन अमरीकी डालर थी, 2001-02 के दौरान

चार्ट VI.27 : बाह्य सहायता (ऋण) प्राप्तियां



घटकर 5.5 बिलियन अमरीकी डालर रह गई (चार्ट VI.28)। वर्ष 2001-02 के दौरान ऋण परिशोधन अदायगियों में थोड़ी बहुत कमी आई और अल्पावधि ऋणों के अंतर्गत निवल प्राप्तियां ऋणात्मक रहीं (0.9 बिलियन अमरीकी डालर), जबकि 2000-01 के दौरान 0.1 बिलियन अमरीकी डालर की प्राप्तियां हुई थीं।

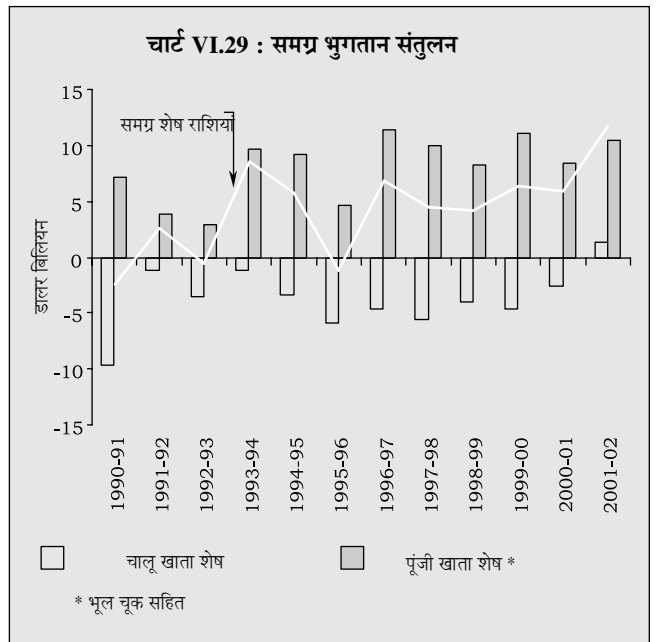
चार्ट VI.28 : अल्पावधि ऋण



समग्र शेष राशियां

6.39 समग्र शेष राशियों ने वर्ष 2001-02 के दौरान 11.8 बिलियन अमरीकी डालर का अधिशेष दर्ज किया, जबकि 2000-01 में यह राशि 5.9 बिलियन अमरीकी डालर की थी (चार्ट VI.29)।

चार्ट VI.29 : समग्र भुगतान संतुलन



सारणी 6.6 विदेशी मुद्रा भंडार

(मिलियन अमरीकी डालर)

वर्ष	स्वर्ण	विशेष आहरण अधिकार	विदेशी मुद्रा आस्तियां	विदेशी मुद्रा भंडार	निधि में भंडार की स्थिति	आइएमएफ ऋण का बकाया उपयोग
1	2	3	4	5 (2+3+4)	6	7
मार्च 1993	3,380	18	6,434	9,832	296	4,799 (3,433)
मार्च 1994	4,078	108	15,068	19,254	299	5,040 (3,568)
मार्च 1995	4,370	7	20,809	25,186	331	4,300 (2,755)
मार्च 1996	4,561	82	17,044	21,687	310	2,374 (1,625)
मार्च 1997	4,054	2	22,367	26,423	291	1,313 (947)
मार्च 1998	3,391	1	25,975	29,367	283	664 (497)
मार्च 1999	2,960	8	29,522	32,490	663	287 (212)
मार्च 2000	2,974	4	35,058	38,036	658	26 (19)
मार्च 2001	2,725	2	39,554	42,281	616	0
मार्च 2002	3,047	10	51,049	54,106	610	0
जून 2002	3,330	10	54,703	58,043	651	0

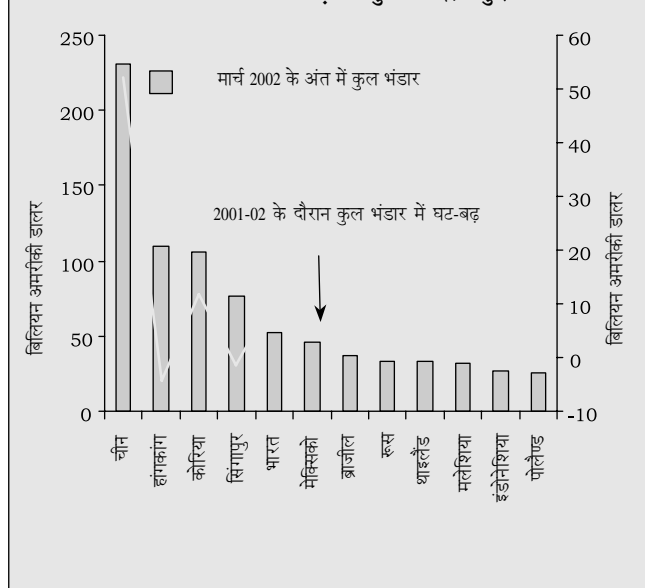
टिप्पणी : कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े मिलियन विशेष आहरण अधिकार हैं ।

विदेशी मुद्रा भंडार

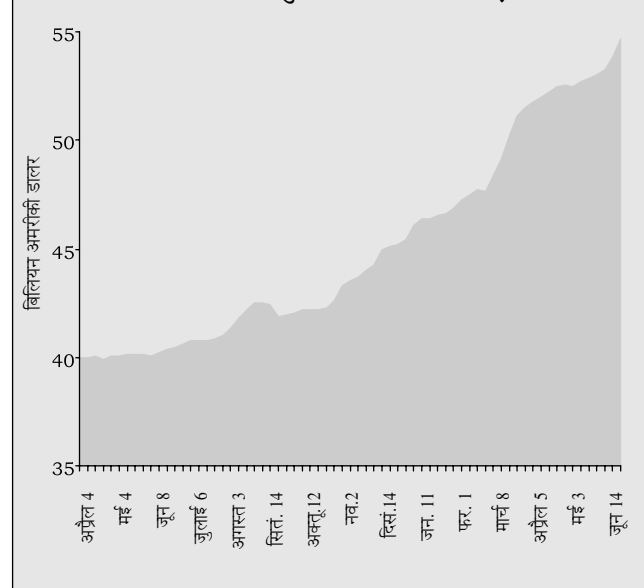
6.40 भारत के विदेशी मुद्रा भंडार जिसमें विदेशी मुद्रा आस्तियां, भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा धारित स्वर्ण और सरकार द्वारा धारित विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) शामिल हैं, 2001 के अंत के 42.3 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर मार्च 2002 के अंत में 54.1 बिलियन अमरीकी डालर हो गया । 2001-02 के दौरान 11.8 बिलियन अमरीकी डालर का संग्रह (2000-01 के दौरान 4.2 बिलियन अमरीकी डालर) अबतक किसी एक वर्ष में हुई वृद्धि की तुलना में सर्वोच्च है (सारणी 6.6 और परिशिष्ट सारणी VI.9) । विदेशी मुद्रा भंडार के वर्तमान स्तर के साथ भारत उभरते बाजार वाले देशों में सर्वोच्च विदेशी मुद्रा भंडार का धारक है (चार्ट VI.30) ।

6.41 भारतीय रिजर्व बैंक की विदेशी मुद्रा आस्तियां, जो विदेशी मुद्रा भंडार का प्रमुख अंश हैं, 2001-02 के दौरान बढ़कर 11.5 बिलियन अमरीकी डालर की हो गई, जिसमें अधिकतर वृद्धि नवंबर 2001 से हुई । विदेशी मुद्रा आस्तियों में 2001-02 के पहले पांच महीनों में 3.0 बिलियन अमरीकी डालर की वृद्धि हुई, परंतु सितंबर 2001 में 11 सितंबर की गतिविधियों के बाद विदेशी संस्थागत निवेश के अंतर्गत निधियों के बहिर्वाह के कारण 0.6 बिलियन अमरीकी डालर की गिरावट आई । यह स्थिति शीघ्र ही सुधर गयी और 2001-02 के अंतिम छह महीनों में विदेशी मुद्रा आस्तियों में 9.1 बिलियन अमरीकी डालर की वृद्धि हुई (चार्ट VI.31) ।

चार्ट VI.30 : स्वर्ण को छोड़कर कुल विदेशी मुद्रा भंडार



चार्ट VI.31 : विदेशी मुद्रा भण्डार में उतार - चढ़ाव



6.42 भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा धारित स्वर्ण का मूल्य 0.3 बिलियन अमरीकी डालर बढ़कर मार्च 2001 के अंत के 2.7 बिलियन अमरीकी डालर के मुकाबले मार्च 2002 के अंत में 3.0 बिलियन अमरीकी डालर हो गया। सरकार द्वारा धारित विशेष आहरण अधिकार का स्तर वर्ष के दौरान 8 मिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर मार्च 2002 की समाप्ति पर 10 मिलियन अमरीकी डालर का हो गया।

6.43 भारतीय रिजर्व बैंक की बकाया वायदा देयताएं जो कि विवेकसम्मत प्रारक्षित प्रबंध नीति के एक भाग के रूप में अपेक्षाकृत निम्न स्तर पर रखी गईं, वर्ष के दौरान मार्च 2001 के अंत के 1.3 बिलियन अमरीकी डालर से और घटकर मार्च 2002 के अंत में 0.4 बिलियन अमरीकी डालर की रह गईं। परिणामस्वरूप, सकल विदेशी मुद्रा भण्डार की तुलना में बकाया वायदा देयताओं का अनुपात मार्च 2001 की समाप्ति के 3.0 प्रतिशत से तेजी से नीचे गिरकर मार्च 2002 के अंत में 0.7 प्रतिशत रह गया (चार्ट VI.32)।

6.44 2002-03 दौरान अब तक (16 अगस्त 2002 तक) विदेशी मुद्रा आस्तियां 6.4 बिलियन अमरीकी डालर बढ़कर 57.4 बिलियन डालर की हो जाने से विदेशी मुद्रा भण्डार 6.5 बिलियन अमरीकी डालर बढ़कर 60.6 बिलियन अमरीकी डालर का हो गया। इसी अवधि में स्वर्ण धारिता के मूल्य में 0.2 बिलियन डालर की वृद्धि दर्ज की गई जिससे यह इसी अवधि में बढ़कर 3.2 बिलियन अमरीकी डालर का हो गया। जून 2002 के अंत में बकाया वायदा देयताएं 0.4 बिलियन अमरीकी डालर की थी, जबकि मार्च 2002 के अंत में भी वही स्तर था।

विदेशी मुद्रा भण्डार की पर्याप्तता के संकेतक

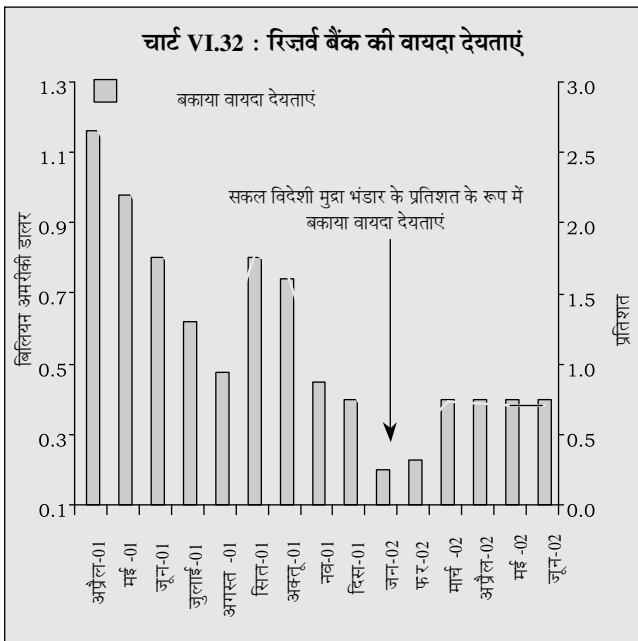
6.45 विदेशी मुद्रा भण्डार के पर्याप्त स्तर की स्थिति प्राप्त करने के लिए भारत के प्रयास अंतर्राष्ट्रीय अनिश्चितताओं में सही साबित

हुए हैं। अब व्यापक रूप में इस बात की सहमति है कि उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं में भण्डार की पर्याप्तता के आकलन को, केवल वणिज आयात की मात्रा अथवा चालू खाता घाटे की मात्रा के साथ जोड़कर देखना ही पर्याप्त नहीं होगा। अतः, हाल के वर्षों में भारतीय मुद्रा भण्डार के प्रबंधन के समग्र दृष्टिकोण से, भुगतान संतुलन का बदलता स्वरूप प्रतिबिंबित हुआ है। चालू खाते में होने वाली संभावित गतिविधियों के अतिरिक्त, विदेशी मुद्रा भण्डार के प्रबंधन ने विभिन्न प्रकार के प्रवाहों और अन्य अपेक्षाओं से संबद्ध जोखिमों को भी दर्शाने का प्रयास किया है। विदेशी मुद्रा भण्डार का पर्याप्त उच्च स्तर यह सुनिश्चित करने के लिए भी आवश्यक है कि लम्बे समय तक चलने वाली कोई अनिश्चितता की स्थिति आये तो यह विदेशी मुद्रा भण्डार समस्त मोर्चों पर पर्याप्त लम्बे समय 'जोखिम पर चलनिधि' की पूर्ति करने में पर्याप्त हो।

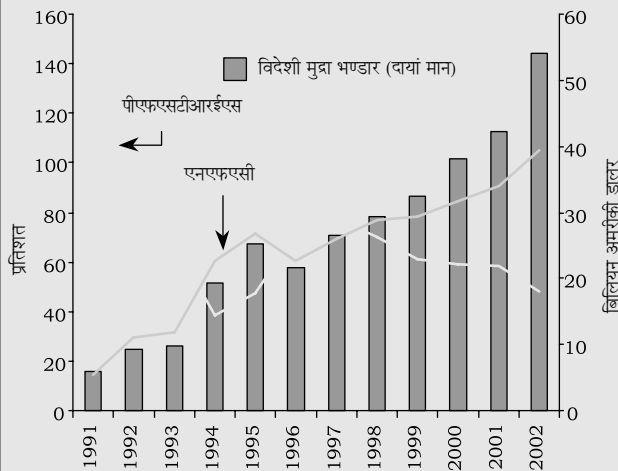
6.46 विदेशी मुद्रा भण्डार में हाल के वर्षों में हुई गतिविधियां चालू और पूंजी खातों पर भारत के बाह्य वित्तीय अपेक्षाओं के साथ कदम-कदम से मिला कर चली हैं। विदेशी मुद्रा भण्डार के प्रबंधन की नीति अनेक पहचानने योग्य कारकों और अन्य आकस्मिकताओं को ध्यान में रखकर बनायी गयी है, जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ चालू खाता घाटे की मात्रा, अल्पावधिक देयताओं की मात्रा (दीर्घावधि कर्जों पर वर्तमान चुकौती सम्बन्धी बाध्यताएं भी शामिल हैं), संविभागीय निवेश में संभावित घट-बढ़ और अन्य प्रकार पूंजी प्रवाह, भुगतान संतुलन पर बाह्य आघातों से पड़ने वाला अप्रत्याशित दबाव (जैसा कि 1997-98 में पूर्वी एशिया संकट का असर या 1999-2000 में तेल की कीमतों में वृद्धि से या अमेरिका की हाल घटनाओं से हुआ), और अनिवासी भारतीयों (एनआरआई) की देश में प्रत्यावर्तित विदेशी मुद्रा जमा राशि की गतिविधियां, शामिल हैं। विदेशी मुद्रा भण्डार के स्तर में अल्पावधि उतार-चढ़ावों को एकतरफ छोड़कर नीतिगत उद्देश्य है कि दीर्घावधि में भण्डार की मात्रा, अर्थव्यवस्था में वृद्धि और जोखिम समायोजित पूंजी प्रवाह के अनुरूप हो।

6.47 इस संदर्भ में, 'जोखिम पर चलनिधि' नियम का सुझाव दिया गया है, जो किसी देश के सामने आने वाले प्रत्याशित जोखिमों को भी पहले से ही ध्यान में रखेगा। तदनुसार, देश की चलनिधि की स्थिति की गणना संबंधित वित्तीय चरों (विनिमय दरें, पण्य कीमतें, ऋण का कीमत लागत अंतर इत्यादि) के संदर्भ में संभावित परिणामों के दायरे के तहत की जा सकती है, जबकि 'जोखिम पर चलनिधि' की अवधारणा पर मोटे तौर पर विभिन्न मंचों पर चर्चा की जा चुकी है, किंतु, उसकी कोई विशिष्ट रूपरेखा नहीं दी गई है। इसके लिए संस्थाओं और देशों को अपने-अपने दृष्टिकोणों का विकास स्वयं करना होगा।

6.48 इन मुद्दों ने अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा भण्डारों की पर्याप्तता की नियमित निगरानी की आवश्यकता स्पष्ट की है। विदेशी मुद्रा भण्डार की पर्याप्तता का परंपरागत व्यापार आधारित संकेतक अर्थात् निर्यात-गत भुगतान के लिए विदेशी मुद्रा भण्डार की पर्याप्तता जो कि दिसम्बर 1990 की समाप्ति पर तीन सप्ताह के निर्यातों के वित्तपोषण तक के

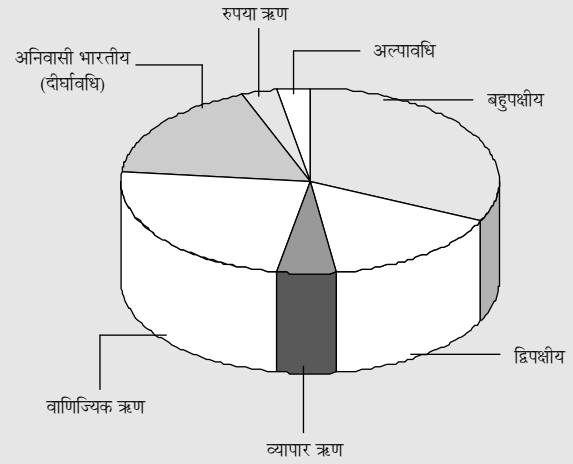


चार्ट VI.33 : विदेशी मुद्रा भण्डार और पर्याप्तता संकेतक



टिप्पणी: पोएफएसटीआरईएस - विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधि से संचयी संविभाग प्रवाह तथा अल्पावधि ऋण का अनुपात है। एनएफएसी संचलन में मुद्रा से भारतीय रिज़र्व बैंक की निवल विदेशी मुद्रा आस्तियों का अनुपात है।

चार्ट VI.34 : भारत के बाह्य ऋण की संरचना (मार्च 2002 के अंत में)



निम्न स्तर पर आ गया था, वह मार्च 2002 की समाप्ति पर सुधर कर 11.3 महीने के निर्यात के वित्तपोषण के स्तर तक पहुंच गया है। मुद्रा-आधारित संकेतक की दृष्टि से करेंसी की तुलना में भारतीय रिज़र्व बैंक की निवल विदेशी मुद्रा आस्तियों का अनुपात मार्च 1991 की समाप्ति के 14.4 प्रतिशत से तेजी से बढ़कर मार्च 2002 की समाप्ति पर 105.2 प्रतिशत हो गया। व्यापक मुद्रा की तुलना में विदेशी मुद्रा भण्डार का अनुपात उसी अवधि में 3.0 प्रतिशत से बढ़कर 17.6 प्रतिशत हो गया। विदेशी मुद्रा भण्डार पर्याप्तता का ऋण-आधारित संकेतक भी 1990 से लगातार सुधर रहा है। उतार-चढ़ाव वाले पूंजी प्रवाह का अनुपात (संचयी संविभागीय प्रवाह और अल्पावधि ऋण के रूप में परिभाषित), जो कि मार्च 1996 की समाप्ति पर विदेशी भण्डार का 71.1 प्रतिशत था, सितम्बर 2001 की समाप्ति

तक गिरकर 48.1 प्रतिशत तक आ गया (चार्ट VI.33)। इन संकेतकों के आधार पर, विदेशी मुद्रा भण्डार का वर्तमान स्तर संतोषप्रद माना जा सकता है।

बाह्य ऋण

6.49 भारत का बाह्य ऋण, 2001-02 के दौरान 1.6 बिलियन अमरीकी डालर (1.6 प्रतिशत) से गिरकर मार्च 2001 की समाप्ति के 99.6 बिलियन अमरीकी डालर के मुकाबले मार्च 2002 के अंत में 98.1 बिलियन अमरीकी डालर के रह गये। भारत पर लगभग आधा बाह्य ऋण बहुपक्षीय और द्विपक्षीय एजेंसियों का है, जबकि लगभग एक चौथाई बाह्य वाणिज्यिक उधारी से प्राप्त किया गया है (चार्ट VI.34)। 2001-02 के दौरान बहु-पक्षीय ऋण, तथा

बाक्स VI.2

बाह्य ऋण प्रबंधन

पिछले दशक में भारत के बाह्य ऋण प्रबंधन समेकन के कारण भारत विश्व बैंक द्वारा 'कम ऋणग्रस्त राष्ट्र' के रूप में वर्गीकृत हो सका है। बाह्य ऋणों को निर्वहनीयता प्रदान करने के लिए बहु आयामी रणनीति के मुख्य तत्त्व अग्रलिखित रहे हैं ;

- चालू खाता घाटे को निर्वहनीयता की सीमा में बनाये रखने के लिए प्रोत्साहन तथा निर्यात संवर्धन की योजनाएं ;
- ऋणोत्तर पूंजी प्रवाह को प्रोत्साहित करने वाले उपाय;
- अनुमोदनीय प्रक्रिया के अधीन वार्षिक सीमा, न्यूनतम परिपक्वता संबंधी प्रतिबंध और बाह्य वाणिज्यिक उधारियों के लिए प्राथमिकता का निर्धारण। अनुमोदन प्रक्रिया को समय के साथ-साथ क्रमिक रूप से शिथिल किया गया है, वर्तमान में उधार लेने की दोहरी प्रणाली (50 मिलियन अमरीकी डालर) तक उधार लेने के लिए स्वचालित प्रणाली और इस उच्चतम सीमा से ऊपर के उधार के लिए पूर्व अनुमोदन की प्रणाली शामिल है ;
- परिपक्वता विन्यास बढ़ाने के लिए दीर्घावधि बाह्य वाणिज्यिक उधारियों को वार्षिक सीमा से बाहर रखना ;

- स्थिर पूंजी आगमों को आकर्षित करने के लिए विदेशी मुद्रा मूल्यवर्ग की अनिवासी भारतीयों की जमाराशियों पर लिबोर (लंदन इंटर बैंक ऑफर रेट) योजित ब्याज दरों की उच्चतम सीमा और न्यूनतम परिपक्वता अवधि निश्चित करना और अल्पावधि ऋण को बढ़ने से रोकना;
- नियंत्रणों के साथ-साथ अल्पावधि ऋणों में कमी करना ताकि भविष्य में इसकी अनावश्यक वृद्धि रोकी जा सके ;
- ज्यादा महंगे बाह्य ऋण को चुकाना और उनका पुनर्विचिनीय करना ;
- विदेशी मुद्रा की अनावश्यक उधारी से बचने के लिए बाजार-निर्धारित विनिमय दर नीति,
- बाह्य क्षेत्र की अनिश्चितताओं के प्रति सुरक्षा प्रदान करने के लिए विदेशी मुद्रा भण्डार की सचेतन वृद्धि करना ;

जहाँतक पारदर्शिता और प्रकटीकरण मानदंडों का संबंध है, भारत बाह्य (जारी....)

(समाप्त....)

ऋण संबंधी आंकड़े, व्याप्ति, समयनिष्ठता, व्यापकता तथा पारदर्शिता की दृष्टि से श्रेष्ठतम आंकड़ों में गिने जाते हैं। बाह्य ऋण के मापन तथा बाह्य क्षेत्र की कारगर निगरानी के लिए, बाह्यऋण-सदेउ अनुपात, ऋण-चुकौती अनुपात, अल्पावधि ऋण स्टॉक का मूल तथा अवशिष्ट परिपक्वता की दृष्टि से अनुपात, जैसी बाह्य जोखिम के लिए विश्वसनीय तथा संगत प्रमुख संकेतकों के साथ सुदृढ़ संस्थागत तंत्र विद्यमान हैं। यद्यपि आकस्मिक देयताएं बाह्यऋण का अंग नहीं हैं, तथापि इनकी भी निगरानी की जाती है। भारतीय दृष्टिकोण निरंतर सांख्यिकी तथा सूचना प्रणाली उन्नयन की आवश्यकता स्वीकार करता है, ताकि समूचित नीतिगत पहल की जा सके तथा सूचनागत अपेक्षाओं को पूरा किया जा सके। तदनुसार, इन विषयों के गहन अनुशीलन के लिए कई अध्ययन दलों का गठन किया गया है।

भारत के नीतिगत प्रयासों के परिणाम स्वरूप भारत के बाह्य निर्वहन संकेतकों में

दीर्घावधि अनिवासी जमाराशियों को छोड़कर बाह्य ऋण के समस्त घटकों में गिरावट आयी।

6.50 ऋण निर्वहनीयता के मुख्य संकेतकों ने निरन्तर समेकन और शोधन क्षमता में सुधार दर्शाते हैं (बाक्स VI.2)। सकल घरेलू उत्पादन (जीडीपी) की तुलना में बाह्य ऋण का अनुपात मार्च 2001 की समाप्ति के 22.3 प्रतिशत से गिरकर मार्च 2001 की समाप्ति पर 20.8 प्रतिशत रह गया। कुल ऋण के अनुपात में, मार्च 2002 की समाप्ति पर 35.8 प्रतिशत रियायती ऋण, मार्च 2002 की समाप्ति के 36.0 प्रतिशत से लगभग अपरिवर्तित ही रहा। अल्पावधि ऋण का आकार कुल ऋण और प्रारक्षित निधि दोनों दृष्टि से संतुलित बना रहा। कुल ऋण की तुलना में अल्पावधि ऋण का अनुपात मार्च 2001 के समाप्ति के 3.5 प्रतिशत से गिरकर मार्च 2002 की समाप्ति पर 2.8 प्रतिशत रह गया, जबकि विदेशी मुद्रा भण्डार से अल्पावधि ऋण का अनुपात मार्च 2001 की समाप्ति के 8.2 प्रतिशत से गिरकर मार्च 2002 की समाप्ति पर 5.1 प्रतिशत रह गया। (सारणी 6.7) चालू प्राप्तियों की तुलना में ऋण का अनुपात मार्च 2001 के अंत के 126.2 प्रतिशत से घटकर मार्च 2002 के अंत में 122.5 प्रतिशत हो गया है।

1990 के दशक में महत्वपूर्ण सुधार दृष्टिगत होता है। समग्र ऋण स्थिति की दृष्टि से भारत की स्थिति 1991 की बाजील और मैक्सिको के बाद तीसरे सबसे बड़े ऋणी से सुधरकर 2000 में ब्राजील, रूस, चीन अर्जेंटाइना, इंडोनिशिया, कोरिया तुर्की, और थाइलैण्ड के पश्चात नवें स्थान पर आ गई है। बाह्य ऋण अनुपात मार्च 1992 के अंत के 38.7 प्रतिशत से घटकर मार्च 2002 के अंत में 20.8 प्रतिशत पर आ गया जबकि कुल ऋणसे अल्पावधि ऋण का अनुपात उसी अवधि के दौरान 10.3 प्रतिशत से घटकर 2.8 प्रतिशत रह गया। कुल ऋण चुकौती अनुपात 1990-91 के 35.3 प्रतिशत से आधे से अधिक कम होकर 2001-02 कि दौरान 14.1 प्रतिशत रह गया।

ऋण-चालू प्राप्तियों का अनुपात मार्च 1991 के अंत के 328.9 प्रतिशत से नीचे आकर मार्च 2002 के अंत में 122.5 प्रतिशत रह गया। ऋण की संरचना की दृष्टि से, भारत के बाह्य ऋण का लगभग 36 प्रतिशत रियायती ऋण का है जोकि अंतर्राष्ट्रीय मानकों की तुलना में है ऊंचा है।

6.51 ऋण-चुकौती अनुपात और देयता-चुकौती अनुपात, जो कि पिछले वर्ष समय पूर्व-भुगतान के कारण बढ़ गए थे, 2001-02 के दौरान पिछले वर्ष के 17.3 तथा 18.3 प्रतिशत से घटकर क्रमशः 14.1 प्रतिशत और 15.3 प्रतिशत रह गए। इससे, उल्लेखनीय उपायों के रूप में, वर्तमान में बाह्य प्राप्तियों में वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है (सारणी 6.8 और चार्ट VI.35)।

विदेशी मुद्रा विनिमय दर की गतिविधियां

6.52 अमरीकी डालर की तुलना में भारतीय रुपये की विनिमय दर 2001-02 के दौरान प्रति अमरीकी डालर के लिए 46.56 रुपये से 48.85 रुपये के दायरे में रही। मासिक औसत के आधार पर, विनिमय दर मार्च 2001 के प्रति अमरीकी डालर के 46.62 रुपये से 4.3 प्रतिशत गिरकर होकर मार्च 2002 में 48.74 रुपये प्रति अमरीकी डालर रह गई। अप्रैल-अगस्त 2001 के दौरान अन्य बड़ी अंतर्राष्ट्रीय मुद्राओं की तुलना में मोटे तौर पर यह स्थिर रही। 11 सितंबर की घटना के चलते वित्तीय बाजार में व्याप्त आशंका की भावनाओं को दर्शाते हुए, अगस्त और सितम्बर 2001 के बीच, अमरीकी डालर,

सारणी 6.7 : बाह्य ऋण के महत्वपूर्ण संकेतक

(मार्च के अंत में)

(प्रतिशत)

	1991	1992	1993	1994	1995	1996	1997	1998	1999	2000	2001	2002
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
विदेशी मुद्रा भण्डार की तुलना में अल्पावधि ऋण (मूल परिपक्वता अवधि)	146.5	76.7	64.5	18.8	16.9	23.2	25.5	17.2	13.2	10.3	8.2	5.1
विदेशी मुद्रा आस्तियों की तुलना में अल्पावधि ऋण (मूल परिपक्वता अवधि)	382.1	125.6	98.5	24.1	20.5	29.5	30.1	19.4	14.5	11.2	8.8	5.4
विदेशी मुद्रा भण्डार की तुलना में ऋणोत्तर उधार और अल्पावधि ऋण	148.2	79.2	72.6	44.5	57.0	92.3	105.4	107.4	102.1	99.9	100.8	88.4
विदेशी मुद्रा भण्डार की तुलना में अल्पावधि और प्रतिवर्ती ऋणोत्तर उधार	146.6	76.8	67.1	38.7	47.3	71.1	77.3	70.1	60.8	59.0	58.5	48.1
चालू प्राप्तियों की तुलना में ऋण	328.9	312.3	323.4	275.6	235.8	188.9	169.6	159.8	162.1	145.6	126.2	122.5
चालू प्राप्तियों की तुलना में ब्याज भुगतान	15.5	13.0	12.5	10.5	9.7	8.8	7.3	7.5	7.8	7.3	6.6	5.4

सारणी 6.8 : बाह्य ऋण-चुकौती संबंधी भुगतान

(मिलियन अमरीकी डालर)

मद	2001-02	2000-01	1999-00
1	2	3	4
1. बाह्य सहायता @	3,240	3,706	3,438
2. बाह्य वाणिज्यिक उधारियां *	5,997	7,665	4,758
3. अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आइएमएफ) #	0	26	267
4. अनिवासी भारतीयों की जमाराशि (ब्याज भुगतान)	1,555	1,659	1,742
5. रुपया ऋण चुकौती	519	617	711
6. कुल ऋण चुकौती	11,311	13,673	10,916
7. कुल चालू प्राप्तियां **	80,142	79,003	67,472
8. ऋण चुकौती अनुपात (6/7 प्रतिशत)	14.1	17.3	16.2
9. चालू प्राप्तियों ब्याज भुगतान से अनुपात (प्रतिशत)	5.4	6.6	7.3
10. चालू प्राप्त ऋण का अनुपात (प्रतिशत)	122.5	126.2	145.6
11. देयता चुकौती अनुपात (प्रतिशत)	15.3	18.3	17.0

@ गैर-सरकारी लेखा सहित

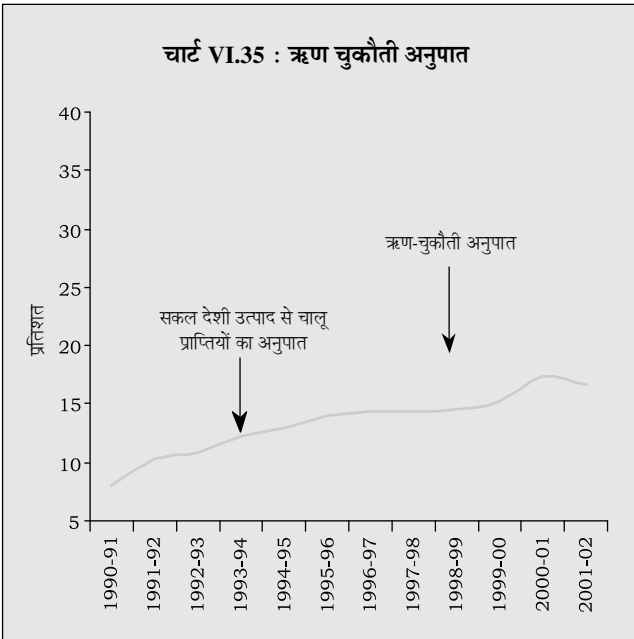
* मध्यावधि, दीर्घावधि और अल्पावधि ऋणों पर ब्याज सहित

सकल संचयी आबंटन पर प्रभार को छोड़कर

** आधिकारिक अंतरणों को छोड़कर

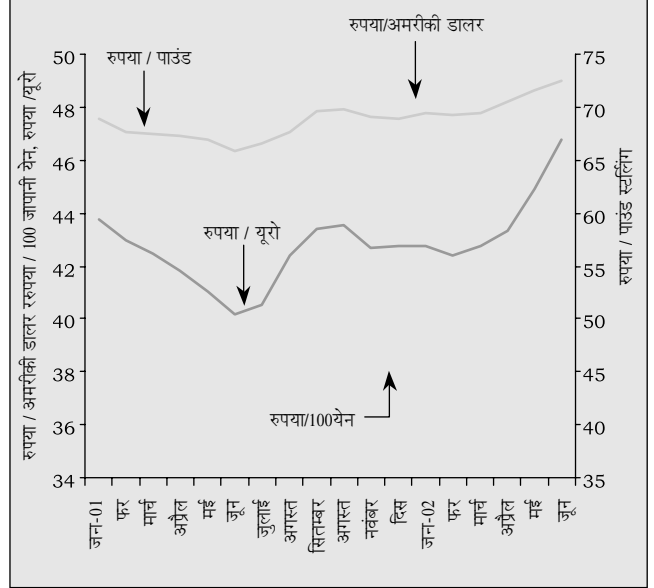
नोट : 1. इस सारणी में ऋण-चुकौती भुगतान, भुगतान संतुलन के अनुरूप लेखांकन की अर्जन विधि का अनुगमन किया गया है इसलिए उसमें नकदी आधार पर दर्ज से आंकड़ों से अंतर हो सकता है।
2. आस्ति-चुकौती अनुपात कुल वर्तमान प्राप्तियों के रूप में ऋण चुकौती भुगतान और लाभ के विप्रेषण और लाभांशों का एकसाथ प्रतिनिधत्व करता है।

चार्ट VI.35 : ऋण चुकौती अनुपात



यूरो, पाउंड स्टर्लिंग और जापानी येन की तुलना में रुपये के मूल्य में, क्रमशः, 1.1 प्रतिशत, 2.4 प्रतिशत, 2.9 प्रतिशत और 3.5 प्रतिशत

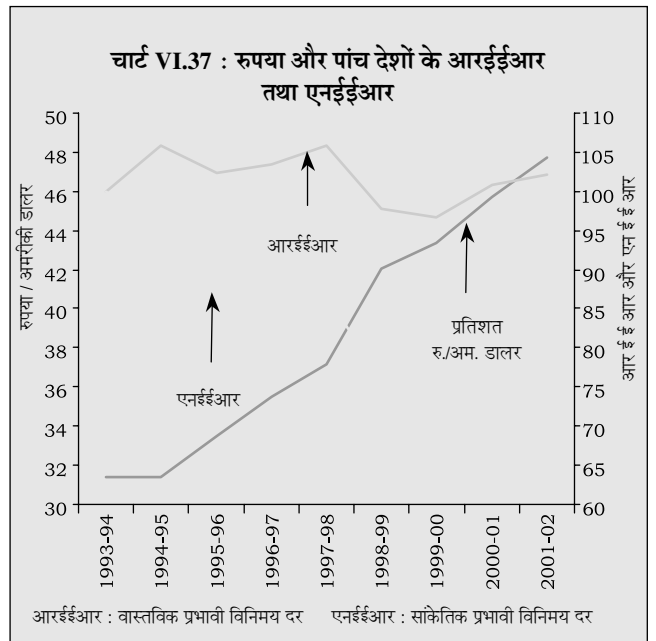
चार्ट VI.36 : प्रमुख मुद्राओं की तुलना में भारतीय रुपया



की गिरावट आई। अवमूल्यित हुआ। तदनंतर, सितम्बर 2001 और मार्च 2002 के बीच रुपया इन सभी मुद्राओं के विरुद्ध मजबूत हुआ और वास्तव में यूरो, पाउंड, स्टर्लिंग और जापानी येन के विरुद्ध इसने क्रमशः 1.5 प्रतिशत, 0.5 प्रतिशत और 7.8 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की (चार्ट VI.36)।

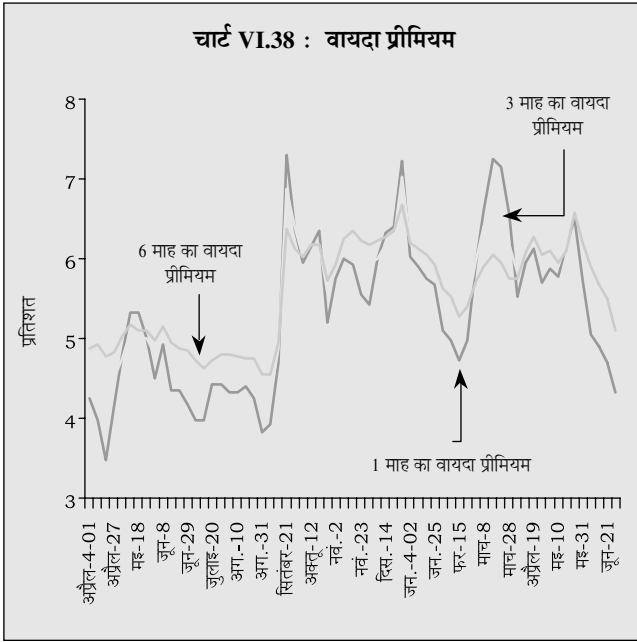
6.5.3 मुख्य अंतर्राष्ट्रीय मुद्राओं के मुकाबले रुपये के उतार-चढ़ाव सांकेतिक प्रभावी विनिमय दर नीयर (एनईईआर) के व्यवहार में प्रदर्शित होते हैं। वर्ष के दौरान वास्तविक प्रभावी विनिमय दर रीअर (आरईईआर) मोटे तौर पर स्थायी बनी रही (चार्ट VI.37)।

चार्ट VI.37 : रुपया और पांच देशों के आरईईआर तथा एनईईआर



आरईईआर : वास्तविक प्रभावी विनिमय दर एनईईआर : सांकेतिक प्रभावी विनिमय दर

6.54 स्वैप के खण्ड में, तीनों परिपक्वता अवधियों (एक माह, तीन माह और छह माह) के लिए वायदा प्रीमियम 2002 के पहले पांच महीनों (अप्रैल-अगस्त) के दौरान 4 प्रतिशत के आस-पास बना रहा। 11 सितम्बर के बाद के दिनों में सभी परिपक्वता अवधियों पर प्रीमियम बढ़कर 5.5 - 5.6 प्रतिशत हो गया और दिसंबर 2001



में और ज्यादा बढ़कर 6.3 - 6.4 प्रतिशत हो गया। मार्च 2002 के दौरान एक माह, तीन माह और छह माह का वायदा प्रीमियम औसतन 5.9 - 6.9 प्रतिशत के बीच रहा (चार्ट VI.38)।

6.55 मई 2002 में अनिश्चितता की संक्षिप्त अवधि को छोड़कर 2002-03 के पहले चार महीनों के दौरान भारतीय रुपया मोटे तौर पर स्थिर रहा। अप्रैल-जुलाई 2002 के दौरान रुपया 48.67-49.06 प्रति अमरीकी डालर के दायरे में घटता-बढ़ता रहा। 16 अगस्त 2002 को विनिमय दर 48.58 रु. प्रति अमरीकी डालर की थी। छह माह का वायदा प्रीमियम अप्रैल-जून 2002 के दौरान 5.1 प्रतिशत-6.6 प्रतिशत के दायरे में रहा। औसत छह माह का प्रीमियम मई 2002 में बढ़कर 6.2 प्रतिशत हो गया बाद में यह जुलाई 2002 में गिरकर 4.6 प्रतिशत रह गया।

6.56 हाल की अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों ने बाजारों में सुव्यवस्थित स्थिति (बिना कोई विशिष्ट लक्ष्य बनाए) बनाए रखने के लिए विनिमय दरों की सावधानीपूर्ण निगरानी की आवश्यकता को रेखांकित किया है। बिना किसी निश्चित दर लक्ष्य के तीव्र उतार-चढ़ावों के प्रबंधन पर ध्यान केन्द्रित करके, अन्तर्निहित मांग और आपूर्ति की स्थितियों के अनुसार विनिमय दर में उतार-चढ़ाव को विदेशी मुद्रा विनिमय दर निर्धारित करने देने की भारत की विनिमय दर नीति काफी समय से सुव्यवस्थित रूप से चलते हुए तथा समय की परीक्षा पर खरी उतरी है। कई अनपेक्षित बाहरी और घरेलू गतिविधियों के बावजूद, भारत की बाहरी स्थिति अत्यधिक संतोषप्रद बनी रही। विदेशी मुद्रा बाजार से लेन-देन करते समय भारतीय रिजर्व बैंक का वही सावधानीभरा, सतर्कतापूर्ण और लचीला दृष्टिकोण जारी रहेगा। यह संतोष का विषय है कि उभरते हुए बाजारों में व्यवहार्य विनिमय दर नीतियों पर हुए हाल के अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधानों ने भारत द्वारा अपनाई गई विनिमय दर नीति को महत्वपूर्ण समर्थन प्रदान किया है। अनेक देश (पूर्वी एशियाई देशों सहित) अब इसी तरह की नीतियों का अनुसरण कर रहे हैं।